ISSN 0976- 8300

विश्व आयुर्वेद परिषद्

पत्रिका

वर्ष : 13 अंक : 7-8, सम्वत् : 2073 आषाढ़ - श्रावण जुलाई-अगस्त, 2016

संयुक्तांक

भृंगराज

Website : www.vishwaayurveda.org

वर्षा ऋतु

A Reviewed

Journal of Vishwa Ayurved Parishad

₹50/-

लखनऊ में सम्पन्न राष्ट्रीय कार्य समिति एवं संगोष्ठी की झलकियाँ

हांगकांग एवं देश के विभिन्न स्थानों में विश्व आयुर्वेद परिषद् की गतिविधियाँ

प्रकाशन तिथि - 15.08.2016 ISSN 0976- 8300
पंजीकरण संख्या - LW/NP507/2009/11 आर. एन.आई. नं. : यू.पी.बिल./2002-9388

देश के विभिन्न स्थानों में विश्व आयुर्वेद परिषद् की गतिविधियाँ

विश्व आयुर्वेद परिषद् के लिए प्रोफेसर सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र, संरक्षक, विश्व आयुर्वेद परिषद् द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित कराकर, 1/231 विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 से प्रकाशित।

प्रधान सम्पादक - **प्रोफेसर सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र**

विश्व आयुर्वेद परिषद पत्रिका
Journal of Vishwa Ayurved Parishad

वर्ष - 13, अंक - 7-8 आषाढ़-श्रावण जुलाई-अगस्त - 2016

संरक्षक :
- डॉ० रमन सिंह (मुख्य मंत्री, छत्तीसगढ़)
- प्रो० योगेश चन्द्र मिश्र (राष्ट्रीय संगठन सचिव)

प्रधान सम्पादक :
- प्रो० सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र

सम्पादक :
- डॉ० कमलेश कुमार द्विवेदी

सम्पादक मण्डल :
- डॉ० पुनीत कुमार मिश्र
- डॉ० अजय कुमार पाण्डेय
- डॉ० विजय कुमार राय
- डॉ० मनीष मिश्र
- डॉ० आशुतोष कुमार पाठक

अक्षर संयोजन :
- बृजेश पटेल

प्रबन्ध सम्पादक :
- जितेन्द्र अग्रवाल

सम्पादकीय कार्यालय :
विश्व आयुर्वेद परिषद् पत्रिका
1/231, विरामखण्ड, गोमतीनगर
लखनऊ - 226010 (उत्तर प्रदेश)
लेख सम्पर्क- 09415618097, 09336913142
E-mail - vapjournal@rediffmail.com
dwivedikk@rediffmail.com
drramteerthsharma@gmail.com

सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानद एवं अवैतनिक है। पत्रिका के लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

Contents

1- EDITORIAL **2**

2- SURVEY STUDY ON SWAPNA (DREAMS) – ONE OF THE CRITERIA FOR THE PRAKRTI ASSESSMENT
- Divya Shahu, Rani Singh **3**

3- CONCEPTS OF AYURVEDA IN JATAKASARADEEPA
- G.R.R. Chakravarthy **11**

4- उपमान का नैदानिक एवं चिकित्सात्मक महत्त्व
- पल्लवी दीक्षित, गोविन्द पारीक, निशा गुप्ता, कुलदीप जादव **16**

5- MENTAL HEALTH AND INDIAN CULTURE
- Usha Dwivedi **23**

6- CONCEPT OF YOGA AND MOKSHA
- Roshni K. P. **27**

7- कादम्बरी में वनस्पतियों का एक परिचय
- ज्योति शुक्ला, श्याम सुन्दर, भुवाल राम **31**

8- अथर्ववेद एवं आयुर्वेद के सम्बन्धों की विवेचना
- श्याम सुन्दर, ज्योति शुक्ला, भुवाल राम **34**

9- EFFICACY OF HERBAL COMPOUND IN GRAYING OF HAIR: A CASE REPORT
- Hetal Amin, Rohit Sharma Satej Banne **37**

10- WATER POLLUTION AND IT'S MODERN & AYURVEDIC MANAGEMENT
- Nitin Urmaliya, Amit Sinha, Prakash Urmaliya **40**

11- आयुर्वेदक्षेत्रे संस्कृतस्य स्थितिः
- विद्याधीश अनन्ताचार्य काशीकर **44**

12- परिषद् समाचार **47**

अतिथि सम्पादकीय

आयुष विभाग से आयुष मन्त्रालय और राष्ट्रीय आयुष मिशन तक : सम्भावनायें एवं चुनौतियां–

वर्षों पूर्व तक केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत एक छोटा प्रकोष्ठ देशी चिकित्सा पद्धतियों का समन्वय करता रहा। संसाधनों एवं नीतियों के अभाव में यहां कोई विशेष प्रगति नहीं हो सकी। सर्वत्र निराशा का माहौल था। परन्तु पं0 शिवशर्मा तथा फिर वैद्यराज वृहस्पतिदेव त्रिगुण जैसे कुछ प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय आयुर्वेद चिकित्सकों ने अपना वर्चस्व बनाये रखा। पं0 शिवशर्मा के प्रभाव से ही संसद में CCIM/CCRIMH एक्ट 1970–71 पारित हो सका और आयुष संवर्ग धीरे–धीरे एक राजकीय स्वरूप में खड़ा होने लगा। फिर भी यथास्थितिवाद बना रहा। 1998 में वैद्य वृहस्पति देव त्रिगुण के एकल प्रयास से श्री नरसिंह रावजी की सरकार ने स्वास्थ्य मंत्रालय में आयुष विभाग नाम से एक स्वतंत्र विभाग की स्थापना से महत्वपूर्ण प्रशासनिक मोड़ आया और नीतिगत निर्णय तथा कतिपय विकास कार्य होने लगे, फिर भी आयुष संबंधी नीति नियामन एवं कार्यान्वयन में यूरोक्रेट्स तथा एलोपैथिक डाक्टरों का वर्चस्व ही बना रहा और वर्ष 2010 तक कुछ खास होते नहीं दिखा। इस बीच सारी दुनिया में योग और आयुर्वेद का प्रचार प्रसार बढ़ता रहा। औषधी व्यापार के क्षेत्र में भी अच्छी संभावनायें बनने लगीं और भारत सरकार का ध्यान भी इस ओर बढ़ने लगा।

इस बीच भारत में भारी राजनैतिक बदलाव आया और 2014 में भारी बहुमत से श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी की सरकार गठित हो गयी। शीघ्र ही सरकार ने राष्ट्रीय आयुष मिशन की घोषणा करके अपनी इच्छा शक्ति का प्रदर्शन किया। आयुष मिशन के चार प्रमुख प्रकल्प हैं–

1. आयुष क्षेत्र में उच्च शिक्षा के अधिकाधिक संस्थान खोलना।
2. आयुर्वेद चिकित्सकों की संख्या बढ़ाने के साथ–साथ अधिक से अधिक आयुष चिकित्सालय खोलना।
3. लोगों को आयुष चिकित्सा सेवायें उपलब्ध कराने का प्रयास।
4. लोगों को सस्ती व गुणवत्ता युक्त औषधियां उपलब्ध कराना और इसके लिये अनुसंधान को बढ़ावा देना।

राष्ट्रीय आयुष मिशन टेकऑफ भी नहीं कर पाया था कि भारत सरकार ने सबको चकित करते हुए केन्द्रीय सरकार में स्वतंत्र आयुष मंत्रालय स्थापित कर दी। यद्यपि यह नव स्थापित मंत्रालय अभी अपनी शैशवावस्था में ही है और इसके वित्तीय स्रोत व संसाधन भी लगभग यथावत हैं। उम्मीद की जाती है कि शीघ्र ही तेजी से काम होगा और आयुष भारत की चिकित्सा सेवा की मुख्य धारा में जुड़कर जनता की अच्छी सेवा कर सकेगा। कुछ सकारात्मक संदेश भी आने लगे हैं।

संभावनायें प्रचुर हैं, परन्तु चुनौतियां भी कम नहीं। माननीय प्रधानमंत्री के ही शब्दों में आयुष के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती आयुष का मानव संसाधन ही है। हमें निराशा से बाहर आकर अधिकाधिक गुणवत्ता युक्त कार्य संस्कृति का विकास करना होगा। सरकार हमें अच्छे अवसर तथा संसाधन मुहैया करा सकती है, वह भी सीमा के अन्दर ही। परन्तु सरकार स्वयं वैद्य, हकीम, शिक्षक या शोधकर्त्ता तो नहीं बन सकती। वह तो हमें ही बनना होगा। एक बात अवश्य ध्यान देने की है कि आयुष मंत्रालय को अपने वित्तीय स्रोत तो बढ़ाने ही होंगे। बहुप्रस्तावित आयुष मंत्रालय का पब्लिक फंड एलोकेशन कम से कम भारत के स्वास्थ्य बजट का 10 प्रतिशत कर देना चाहिए जो अभी तक लगभग 3 प्रतिशत ही है। नीति नियामन एवं दृष्टि विमर्श से अधिक महत्वपूर्ण है कर्म और कर्म संपादन।

– प्रो0 रामहर्ष सिंह
विशिष्ट आचार्य, काय चिकित्सा, आयुर्वेद संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

SURVEY STUDY ON SWAPNA (DREAMS) – ONE OF THE CRITERIA FOR THE PRAKRTI ASSESSMENT

- Divya Shahu*, Rani Singh**
e-mail : divyashahu30@gmail.com

ABSTRACT :

Amongst the prevailing medical sciences in the world, Ayurveda is the most ancient system of medicine which maintains health and cures diseases through its holistic approach. Many theories and concepts were propounded by ancient scholars of Ayurveda, after their prolong observation and in depth knowledge such as Pancamahabhuta, Tridosha, Mana, Atma, Kala, Disha, Saptadhatu, Parmanuvada, Svabhavoparamvada, etc. The concept of Swapna is one of its important concepts, which is related with the healthy and diseased status of an individual. In this study, it has been tried to show that Swapna can be used as one of the criteria for the assessment of Sharirika Prakrti (physical constitution) of an individual solely or not. Hence, to satisfy this, a survey study has been done based on both the methods, that is one by the physical characters and the other by asking the dream content individually in the form of questionnaire and then comparing both the outcome.

Of all the physical and mental criterions given for the Prakrti assessment, Swapna is also given as one of the criteria in almost all the Samhitas. But today this criterion is very much neglected and nobody consider it in the clinical practice. After going through the entire literature of Ayurveda related to Swapna, it indicates that in ancient time this concept was quite prevalent in clinical practice as there were no sophisticated tools and technologies available for the diagnosis and prognosis of diseases as well as for the maintenance of health.

Keywords : Ayurveda, Swapna, Prakrti, dosha.

INTRODUCTION

The concept of Swapna in Ayurveda is widely mentioned in all its classics. It has been described from physiological, pathological, diagnostic, prognostic and even therapeutic point of view. Dalhana, the commentator of Sushrut Samhita, defined Swapna as a state when the person perceives different illusory experiences in the semi awakened state due to involvement of Rajo guna. (Dalhana on Su.Su.29/54)

Process of manifestation of Swapna: Swapna or dreams is a half awakened state of a person when all the Indriyas (senses) lose their conscious activities, but the Manas (mind) is not withdrawn from illusory experiences. The mind is the motivator of sense organs, experiencing different self created incidents. (Ca.In.5/42).The normal sleep is very much related with the condition of dosha, dhatu and mala of the body. Bad dreams are the outcome of the excessively deranged doshas whereas the normal state of doshas is responsible for health. (Ca.Su.11/35)

Relation between Swapna and Prakrti: Ayurveda believes that there are different types of the physical constitution (deha Prakrti). According to this, the three main constitutions are known as Vatika, Paittika and Kaphaja. As per Acharya Sushruta, these physical

Assistant Professor, Dept of Sanskrit Samhita Sidhhant, SNKA Medical college and Hospital, Chandaus, Aligarh, UP. ,Associate Professor, Dept of Ayurveda Siddhant, Faculty of Ayurveda, IMS, BHU, Varanasi.*

constitutions are the result of the predominant dosha at the time of combination of the shukra (spermatazoan) with the shonita (ovum) in the womb when the fetus comes into being (Su.Sa.4/62). Prakrti is the outcome of predominance of doshas at the time of union of sperm and ovum. Also Acharya Caraka has given the factors initiating Prakrti which is determined by the following factors:-

1. Sperms and ovum;
2. Season and condition of the uterus;
3. Food and regimens of the mother; and
4. Nature of the Mahabhuta's comprising the fetus.

The fetus gets afflicted with one or more doshas which are dominantly associated with the above mentioned factors. Swapna is also one of the factors determining the Prakrti of an individual. These dreams are nishphala (fruitless).

Table no.1

Showing daihika Prakrti (physical constitution) and Swapna according to Ayurvedic classics:

Vata Prakrti (A.H.Sa.3/88, A.S.Sa.8/11, Sa.Pu.6/64, B.P.Pu.4/54, Bhe.Vi.4/18)

S.N	Dreams content	Su.S	A.S.	A.H	Sa.S	B.P	Bhe.S
1	moving or flying or wandering in the sky	+	+	+	+	+	+
2	Dwelling on trees	-	-	+	-	-	-
3	Travelling on the mountains (peaks-A.S.)	-	+	+	-	-	-
4	Travelling the dried, uneven and irregular rivers	-	+	-	-	-	-
5	Rides on camel	-	-	-	-	-	+

Pitta Prakrti (A.H.Sa. 3/93, A.S.Sa. 8/14, Sa.S.Pu.6/65, B.P.Pu.4/56, Bhe.Vi.4/21)

S.N.	Dreams content	S.S	A.S.	A.H	Sa.S	B.P	Bhe.S
1	Sees fire/flames/lights	+	+	+	+	+	+
2	Sees gold	+	-	-	-	-	-
3	Sees Karnikara (purging cassia) and palasha (Butea monosperma) trees	+	+	+	-	-	-
4	Lightening, meteors,	+	+	+	-	-	-
5	Blazing Sun	-	+	+	-	-	-

Kapha Prakrti (Su. Sa. 4/72, A.H.Sa. 3/102, A.S.Sa. 8/17, Sa.S.Pu.6/66, B.P.Pu.4/57-58, Bhe.Vi.4/25)

S.N.	Dreams content	Su.S	A.S.	A.H	Sa.S	B.P	Bhe.S
1	Sees beautiful reservoirs of water like lakes and ponds with Lotuses, Hansa (swans), and Cakravaka (type of bird)	+	+	+	+	+	-
2	Sees beautiful reservoirs of water like lakes with lotuses and rows of birds	-	+	+	-	-	-
3	Ponds	-	+	+	-	-	-
4	Clouds	-	+	+	-	-	-
5	Water	-	-	-	-	-	+

In survey work, it is found that the results are quite supportive to the hypothesis of this study.

Aims and objective

The aim of the study is to identify the Prakrti of healthy volunteers based solely on dreams and to see up to what extent the Prakrti found on the basis of dreams is correlating with the Prakrti found by the self assessment Performa. It is according to Ayurvedic literature based on Prakrti.

Material and method

The study was conducted on healthy volunteers for the assessment of Prakrti on the basis of Swapna. For that purpose 100 Healthy Volunteers were selected for the study from BAMS, Post Graduates and Ph.D scholars studying under the Faculty of Ayurveda, Institute of Medical Sciences, BHU, Varanasi.

A questionnaire was prepared containing questions based on dreams for each Prakrti that is Vata, Pitta and Kapha accoding to classics and marks were allotted. Also the self assessment questionnaire to assess Prakrti prepared by Kishor Patwardhan and Rashmi Sharma was used for the study. The comparison is done between these two questionnaire to see whether the outcome matches or not, and if yes then how much it is relevant.

Observation and Result :

The observation and results of the present work have been done by the survey methods in the healthy volunteers by the questionnaire made for dreams based on classics and comparing it with the self assessment questionnaire in general. The observation and results found is in the following way-

Data of Survey on Healthy volunteers:

1. Distribution of volunteers according to age group. (Table No.2)

Age Group	No. of Volunteers
20-24(I)	73
25-29(II)	17
30-34(III)	9
35-39(IV)	1
Total	100

Maximum number of volunteers belongs to age group I which is 73. The minimum number of volunteers belongs to age group IV which is 1.

2. Incidence of volunteers according to Sharirika Prakrti based on dreams(Table No.3)

Prakrti based on dreams	No. of volunteers
V	4
VK	17
VPK	19
VKP	2
PK	11
PV	3
PVK	3
PKV	2
K	8
KV	5
KP	14
KVP	10
KPV	2
Total	100

Maximum no. of volunteers were of VPK prakrti which is 19 and minimum no. of patients in VKP, PKV, KPV having 2 in each.

3. Distribution of volunteers according to Sharirika Prakrti based on Self Assessment Questionnaire (Table No.4)

Prakéti by Self Assessment Questionnaire in general	No. of Volunteers
VK	13
VPK	11
VKP	6
PV	2
PK	8
PVK	3
PKV	5
KV	9
KP	21
KVP	13
KPV	9
Total	100

4. Incidence of Sharirika Prakrti in volunteers by dream method and by general Prakrti assessment method. (Table No.5)

Volunteer No.	Dreams method	General method	Volunteer No.	Dreams method	General method
1.	K	VKP	26.	PK	KVP
2.	KP	KP	27.	V	KPV
3.	VK	VK	28.	V	KVP
4.	K	KPV	29.	VPK	VPK
5.	VK	VK	30.	KVP	KVP
6.	KPV	KPV	31.	VK	VK
7.	KP	KP	32.	K	KVP
8.	VK	VK	33.	VPK	VPK
9.	KP	KP	34.	VKP	PVK
10.	KVP	KP	35.	PK	VKP
11.	VK	VK	36.	KVP	KVP
12.	PK	PK	37.	VPK	PKV
13.	KVP	KVP	38.	VK	VK
14.	PK	KVP	39.	VK	VK
15.	VPK	PKV	40.	VPK	VPK
16.	K	VKP	41.	PK	PK
17.	PK	PK	42.	VPK	KP
18.	KVP	VPK	43.	PVK	KPV
19.	VK	KPV	44.	KP	PVK
20.	V	KVP	45.	PK	PK
21.	KP	KP	46.	VPK	KPV
22.	PK	PK	47.	PK	KVP
23.	VK	VK	48.	VPK	KPV
24.	VPK	KPV	49.	PKV	PKV
25.	KV	KV	50.	KP	KP

The maximum number of volunteer's falls under Kapha-Pitta prakrti which is 21, followed by Vata-Kapha and Kapha-Vata-Pitta each having 13 in number. The minimum number of volunteer's falls under Pitta-Vata prakrti which are 2.

5. Cross study of Prakrti according to dream and according to self assessment Performa: (Table No.6)

Prakrti based on Dream	Prakrti by Self Assessment Questionnaire											Total
	KP	KPV	KV	KVP	PK	PKV	PV	PVK	VK	VKP	VPK	
K	2 9.5%	1 11.1%	2 22.2%	1 7.7%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	2 33.3%	0 0.0%	8 8.0%
KP	11 52.4%	0 0.0%	2 22.2%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	1 33.3%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	14 14.0%
KPV	0 0.0%	1 11.1%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	1 9.1%	2 2.0%
KV	0 0.0%	1 11.1%	4 44.4%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	5 5.0%
KVP	2 9.5%	0 0.0%	0 0.0%	6 46.2%	0 0.0%	1 20.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	1 9.1%	10 10.0%
PK	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	3 23.1%	7 87.5%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	1 16.7%	0 0.0%	11 11.0%
PKV	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	2 40.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	2 2.0%
PV	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	1 12.5%	0 0.0%	2 100.0 %	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	3 3.0%
PVK	0 0.0%	1 11.1%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	1 33.3%	0 0.0%	1 16.7%	0 0.0%	3 3.0%
V	0 0.0%	1 11.1%	0 0.0%	3 23.1%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	4 4.0%
VK	3 14.3%	1 11.1%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	13 100.0%	0 0.0%	0 0.0%	17 17.0%
VKP	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	1 33.3%	0 0.0%	1 16.7%	0 0.0%	2 2.0%
VPK	3 14.3%	3 33.3%	1 11.1%	0 0.0%	0 0.0%	2 40.0%	0 0.0%	0 0.0%	0 0.0%	1 16.7%	9 81.8%	19.0%
Total	21 100.0%	9 100.0%	9 100.0%	13 100.0%	8 100.0%	5 100.0%	2 100.0 %	3 100.0%	13 100.0%	6 100.0%	11 100.0%	100 100.0%

This table shows the result of cross study between the two methods of Prakrti assessment i.e. Prakrti assessment by questionnaire on dreams and Prakrti assessment by self assessment questionnaire in general. The table shows that common Prakrti found in the volunteers by both the methods was KP in 11 volunteers, KPV in 1 volunteer, KV in 4 volunteers, KVP in 6 volunteers, PK in 7 volunteers,

PKV in 2 volunteers, PV in 2 volunteers, PVK in 1 volunteer, VK in 13 volunteers, VKP in 1 volunteer and VPK in 9 volunteers. Out of total 100 volunteers, Prakrti of 57 volunteers i.e. 57 percent was found same by both the methods of Prakrti assessment.

To test the association between the two methods of Prakrti assessment, Friedman chi square test and Wilcoxon Signed Ranks Test were used. The value found was:

Friedman test statistics: Chi square = 2.814

P= 0.093 or p>0.005 Not significant (N.S.)

Wilcoxon Signed Ranks Test: Z= 1.929

P value =0.054 or p > 0.05 Not significant (N.S.)

This shows that there is no significant difference between the two methods. This indicates that there is a definite relationship between the two methods of Prakrti assessment i.e. Prakrti assessment by questionnaire on dreams and Prakrti assessment by self assessment questionnaire in general.

DISCUSSION

Every research starts with a question or set of questions why and how? And the same is true regarding the concept of Swapna. Why and how? It does not mean that something new is being created but research means an attempt to search it again something which is already present in new dimensions and according to the need of the time. The concept of Swapna is not new but prevalent since Vedic period but not in practice today.

The result of this study shows that the maximum volunteer's belongs to VPK Prakrti and after that VK followed by KP in the Prakrti assessment based on dreams. This supports the Ayurvedic view that Vata is the main dosha which is predominantly held responsible for any action of manas and body. This result also shows that there are 4 volunteers having Vata Prakrti and 8 volunteers having Kapha Prakrti i.e ek doshaja Prakrti by the dream based Prakrti assessment questionnaire. For example the person having KP Prakrti by general assessment criteria is seeing only the dream of Kapha Prakrti, here, the principle of "Vyapdeshastu Bhuyasa" is applied and the person sees the dreams according to predominance of particular dosha in the Prakrti formation. This indicates, that the person may observe dream of the predominant dosha in his or her constitution. Although every individual have combination of all dosha in their constitution but our study shows that single doshika Prakrti is found only on the basis of dreams in some individual. Also from the data, it is also observed that single doshika prakrti is not found by the questionnaire made for self assessment of Prakrti in general.

Again the maximum numbers of volunteers were having KP Prakrti followed by VK and KVP according to self assessment performa of Prakrti. As the volunteers were chosen from the Ayurvedic background hence study result may be biased as everybody wants their Prakrti to be of kapha type. The chi square test shows that there is no significant difference between the two methods of Prakrti assessment i.e. Prakrti assessment by questionnaire based on dreams and Prakrti assessment by self assessment questionnaire in general. This indicates that there is a definite relationship between the two methods of Prakrti assessment. Hence, dreams are also regarded as one of the leading criteria for the Prakrti assessment.

SUMMARY AND CONCLUSION

Ayurveda is a unique science of life, having holistic approach towards health and diseases whether physical, mental or spiritual. Many theories and concepts of Ayurveda are not in practice today. Swapna (dream) is also one of them. Why? There are many reasons and one the most important is the great advancement of modern medical science, which has made the job of physicians easy. In the ancient time when no sophisticated tools and technologies were available, the concept of Swapna was very popular in clinical practice for the diagnosis and prognosis of diseases as well as for the maintenance of health and cure of diseases.

This concept requires exploration and interpretation and may be helpful if practiced sincerely with patience and devotion. It is also suggested that this type of concepts should be included in the teaching, training and practical curriculum. If the clinician will give some attention to this approach, definitely it will give some benefit in maintaining the health and curing of disease. Then only it can be propagated in the country and globally also.

REFERENCES :

1. Dalhan, Sushruta Samhita, Edited by Kaviraj Ambikadutta shastri, Published by Chaukhambha Sanskrit sansthan.8th 1993.
2. Athavale. P.G., Drishmartha Ashtanga Sangraha (Sutrasthana) with Hindi Translation, Godavari Publishers and Books Promoters, Nagpur, 2nd Edition, 1991.
3. Bhisagacarya Satyapala, Kashyapa Samhita, revised by Vatsya, Hindi translation, Chaukhamba Sanskrita Sansthana, Varanasi, 10th edition, 2005.
4. Chand Devi, The Atharvaveda Sanskrit Text with English Translation, Munshiram Manoharlal Publishers, Pvt Ltd, 1st edition, 1982.
5. Chand Devi, The Yajurveda, Sanskrit Text with English Translation Munshiram Manoharlal Publishers Pvt.Ltd, 2009.
6. Dharmic Scriptutes Team, The Puranas, A Compact English only Version of the Major 18 Puranas in one document, Issue 1, Draft 1, October 3, 2002(pdf).
7. Dwivedi.B.K, Goswami.P.K, Caraka Samhita with Ayurveda Dipika Commentary by Cakrapanidatta, Chowkhamba Krishnadas Academy, Varanasi, 2nd edition, 2006
8. Ghanekar B.G., Sushruta Samhita with Ayurveda Rasayana Dipika Hindi commentary on Sharirasthana, Meharchand Laksmandas Publication, New Delhi, 1896.
9. Gupta Bhagwat Ram, Ayurveda Ka Pramanika Itihasa, Chowkhamba Krishnadas Academy, Varanasi, 2nd edition, 2003.
10. Gupta Kaviraj Atrideva, Ashtanga Sangraha with Hindi Commentary, Chaukhamba Sanskrit Series Office, Varanasi, 2011.
11. Krishnamurthy.K.H, Bhela SaÞhitÁ with English Translation, Commentary and Critical notes, Chaukhamba Vishwabharati, Varanasi.
12. Kushwaha Harish Chandra, Caraka Samhita with Ayurveda Dipika Hindi Translation, Chaukhamba Orientalia, Varanasi, 1st edition,2005.
13. Murthy. K.R. Srikantha, Sushruta Samhita with English Translation, vol -1, SÚtrasthÁna, Chaukhamba Orientalia, Varanasi, second edition.
14. Paradkara Pt. Hari Sadashiva Shastri, Ashtanga Hrdaya of Vagbhatta with the Commentaries Sarvangasundara of Arundutta and Ayurvedarasayana of Hemadri, Chaukhamba Surbharati Prakashan, Varanasi, 2011.

शेष पेज नं0 39 पर

CONCEPTS OF AYURVEDA IN JATAKASARADEEPA

- G.R.R. Chakravarthy*
e-mail : grrchakravarthy@rediffmail.com

Jatakasaradeepa is the text on astrology written by "Nrisimha daivajna". This author is expected to belong before 10th century A.D. It is written in Sanskrit language. There is a mention of Saravali, an authentic text on astrology, found in Jatakasaradeepa. This text is focusing on details of astrology with various fields and thrown light on some areas of Ayurveda. The subject matter is divided into Adhyayas. The total Adhyayas are 93. In the 60th adhyaya "pancha maha purusha lakshanas" are described; and in which Ayurveda related knowledge is found in the slokas 4,5,6,8,9,10,11,12,13, 14, 15, 16, 17,18, 19,20,21,22,23,24,25 and 26th.

As this text is related to astrology, the subject pertaining to Ayurveda such as triguna, panchabhuta and tridosha concepts are correlated with the Navagrahas and their position in the zodiac. However, the concepts of Ayurveda are applied in astrology confined to the qualities of body (as per the position of navagrahas) mental conditions of persons, health status of the persons etc.

Sattvika lakshanas[1]

The person will be straight forward, compassionate, surrounded with many servants, having unchanged ideas, speaks very appropriate and truth, worshipping gods, and Brahmins, tolerating pains. These are the qualities of sattvika persons.

Rajasa lakshanas[2]

Very brave, having knowledge of arts and writing, having inclination towards sexual indulgence, well versed in performing rituals, more exposed to world, having interest in cracking jokes, speaks untruth and self-blabbering and having the knowledge of Vedas. These are the qualities of rajasa persons.

Tamasa lakshanas[3]

One who is foolish in behavior, very lethargic, cunning, has anger, doesn't accept others' opinions, conducive, and has more hunger, doesn't follow customs, doesn't have cleanliness, miser, makes dangerous things. These are the qualities of tamasa persons.

Swara lakshanas[4]

Voice will have equal output, having that resembling lion with the teeth of lion, his forgiveness will be to that extent that all the world is on the wrong side, he is with the conquering the extremities totally.

Lakshanas of body parts[5]

It is also told that the organs, tongue, skin, teeth, eyes, nails, and hair are having softness. The expiration will be rough for the persons took birth with saraswatha yoga.

Lakshanas of complexion[6]

The luster will be very soft and glorious, clean as king, having excess of tolerance of agonies, having medium interest towards sexual pleasure- these are the qualities of good complexion. The persons having good complexion do have specific qualities.

**Prof. & Head, SJS Ayurveda College, Nazarthpath, Chennai, Tamil Nadu.*

Lakshanas based on panchabhutas[7]

There are panchabhutas influencing humans in all spheres of life. It is told the nature of each person will be as per the domination of the particular bhuta i.e. akasha, vayu, Agni, jala or prithvi.

Gagana swabhava phalam[8]

A person having akasha bhuta predominance is one who knows the meaning of every word and is well versed in sastras, intelligent, enjoys comforts, body parts appear to have cuts in joints, thin extremities, medium constitution, and has a tall stature.

Jala swabhava phalam[9]

The person having predominance of jala bhuta has good strength, drinks lots of water, speaks sweet and eats well, has too many friends, always moving, and is able.

Vayu swabhava phalam[10]

A vayu bhuta predominant person is thin, gets angry very quickly and cools quickly, buddhi will be distorted, has inclination to donate things.

Agni swabhava phalam[11]

The person predominant in Agni bhuta has valor, is unstable, keen, intelligent, though lean eat excessively, appear red, wants to wander.

Prithvi swabhava phalam[12]

There will be smell of camphor, or smell of utpala, having good enjoyement, having tone of lion, confirmed ideas are seen in the persons with prithvi bhuta lakshana.

Gagana Chaya phalam[13]

The person having color of sphatika, and like utpala flower to the skin with wealth and achievement of dharma, artha and kama (trivarga).

Jala chaya phalam[14]

The person will have smooth, greenishglow, having all comforts, wealth etc. is known to be jalachaya.

Vayu chaya phalam[15]

One who has turbid water glow, impure smell, foolishness, dirty rough colour, having meloncholi, falling ill frequently, disturbed mind is considered to have vayu chaya.

Agni chaya phalam[16]

Colour of the lotus, glow of fire, having teeth with moon like colour, conquering all enemies, having gems and gold, completing the works, subsiding the diseases- are all seen in agnichaya person.

Bhoomi chaya phalam [17]

Having smell of ghee, smell of lime, smell of aguru, smooth teeth, nails, hair on the body, having righteous way with all comforts, sweet speech- are all seen in the person having bhoomi chaya.

Vatadosh phalam[18]

The persons having vata dosha domination will have the following qualities—having cold touch, knowing many languages, some times having rhythmic approach, having the quality of matsara, intend to have propaganda, having unfortune protruding teeth, having no good at heart, knowledge in music, forgiveness towards the friends, good technique in earning, sleeplessness, improper way, roughnessof hair of mustaches, scalp hair, no morality, having cracks in palms, soles, easily irritable, loosing the glow, not weeping with hampered mind.

Pittadosh phalam[19]

The persons having the domination of pitta dosha will have the following qualities—having bad odour, easily getting anger, widened eyes, will be pleased immediately, having red nails, red eyes, palms, soles, having improved burning sensation, intelligent, velour, no fear, interested in cold and ice, improper holding, more eating, interested in making love, having seen of dreams of gold, wild fire, "kimsuka" flowers, "mandara" flowers, red gems, blood red coloured places, etc.

Kaphadosha lakshanam[20]

The persons who have the domination of kapha dosha, do have the following qualities—having good wealth, well developed joints and strength, slimy glow, good body, having sattva quality, can tolerate even if hampered thigh or hip etc. brownish glow in eyes, not interested in sweet taste, quite moral, liked by everybody, and giving wealth to others, worshiping teachers, seeing the ponds and rivers and oceans in the dreams.

CONCLUSION

Jatakasaradeepa is a text of astrology where in the application of panchabhuta and tridoshas are discussed, in the context of purusha lakshanas. The relevancy of the subject is completely justified and it is on par with the classical texts of Ayurveda. There are no references quoted by the author that the concerned slokas are barrowed from any text of Ayurveda.

Thus, it is understood that the opinions are given by the author himself in explaining triguna and tridosha lakshanas in human beings, are identical with Ayurveda classical texts. However, the author must have been acquired the knowledge of Ayurveda.

Reference :

1. सात्विकलक्षणम्

ऋजु (मृदु) र्दयाळुर्बहुदास (र) भृत्यः स्थिरस्वभावः प्रियसत्वादी ।

सुरद्विजोपास्तिरतः सहिष्णुर्भवेन्नरः सत्वगुणप्रवानः ।।

2. राजसलक्षणम्

शूरः कलाकव्यनिविष्टबुद्धिः स्त्रीसक्तचित्तः क्रतुषु प्रवोणः।

आडंबरी हास्यरतः प्रगल्भो वेदार्थ(गेयाक्ष)विद्राजसिकः प्रदिष्टः।।

3. तामसलक्षणम्

मूर्खो अलसो वंचयिता परेषांक्रोधि विखंडः(षण्णः) पिशुनः क्षुघार्तः ।

आचारहीनो न शुचिर्न दांतो(र्गदातो)लुब्धः प्रमादी तमसाभिभूतः ।।

4. भूभारनिर्वाहः

भारो भवतिनृपाणां भूम्यर्ह(र्ध) भुंजतां प्रसूतानां।

येषां भारोदर्ध (राध्यर्धं) सकलमहीपालकाम्ये(स्ते) स्युः।।

5. स्वरलक्षणम्

समा(माः) स्वरैः सिंहमृगेन्द्रदन्तिनांरथौघमेरीवृषतोयदायिनां।

समस्तभूमण्डलरक्षणक्षमा भवन्ति भूषा जितशत्रवो नराः।।

6. अवयवस्निग्धतादिलक्षणम्

स्निग्धैर्भव(वं)ति भूपा जिह्वात्वग्दन्तनेत्रनखकेशैः।

रूक्षैरेतैर्निःस्वाः सारस्वत (स्वरैश्च ते) जातकैः (के) कथिताः।।

7. वर्णलक्षणम्

स्निग्धल्के (स्ते) जोयुक्तः शुद्धो वर्णः स(प्र)कीर्तितो नृपतेः।

विपरीतः क्लेशभुजां सुतार्थसुखभोयिनां मध्यः ।।

पञ्चभूतस्वभावछायात्रिदोषफलज्ञानप्रकारः

व्योमांबुवाताग्निमहीस्वभावा सुरासुरेज्यर्किमहीजसौम्यैरू।

छाया मरुत्पित्तबलात्सु(कफानु)ररूपामिश्रैस्तु मिश्रा बलिभिर्नराः स्युः।।

8. गगनस्वभावफलम्

शब्दार्थविच्छास्त्रपटुः प्रगल्भो विज्ञात(न)युक्तो विधृतार्थभोगः।

छिद्रा(चित्रा)ङ्गसन्धिः .शपाणिपादो मध्य(व्योम) प्रकृत्या पुरूषो अतिदीर्घः ।।

9. जलस्वभावफलम्

बलस्वभावो बहुवारिपायी प्रियाभिभाषी इ(द्र) वभोजनश्च।

चलस्वभावो बहुमित्रपक्षः क्षोणीपतिर्नातिचिरं प्रगल्भः।।

10. वायुस्वभावफलम्

सत्वेन वायोः पुरुषः (कृ)शांगः क्षिप्रं च कोपस्य वशं प्रयाति ।

.तै(त्यै)कबुद्धिर्भ्रमणे रव(त)श्च दाता सितो भूपतिरप्रभृ(घृ)ष्यः ।।

11. वह्निस्वभावफलम्

शूरः क्षुधार्तश्चपलो अतितीक्ष्णः ष(प्रा)ज्ञः ऋशो गौरतनुर्विरोधी ।

विहा(द्वा)श्च मानी बहुव(भ)क्षणश्च वह्निस्वभावः पुरुषो अतिकायः ।।

12. पृथिवीस्वभावफलम्

कर्पूरजात्युत्पलपुष्पगन्धो भुनक्ति भोगान् स्थिरलब्धसौख्यः।

सिंहोवयो(भ्रघोषः) स्थिरचित्तवृत्तिर्महीस्वाभावो (भव)ति प्रजातः ।।

13. गगनछायाफलम्

स्फु(स्फ)टिकोत्पलसंकाशा त्वच्छा गगनोत्थिता भवेत् छाया ।

निधिरिव पुंसां धन्या त्रिवर्गफल र गा(सा)धनी शु(सु)भगा।।

14. जलछायाफलम्

स्निग्धा सिता छ(च) हरिता कति(ता) मातेष सर्वसुस्वजननी ।

सौभाग्याभ्युदयशुभान्करोति त(ज)लसंभवा छाया ।।

15. वायुछायाफलम्

असित(ज)लदकान्तिः पापगन्धो अतिमुढो मलिनपरुषवर्णः शोकसंतापतप्तः ।

स भव(वह)ति वधदैत्य(न्य)व्याध्यनर्थार्थहीना(नाशा)न् विचरति पवनोत्था यस्य कान्तिः शरीरे।।

16. वह्निच्छायाफलम्

कमल(न)ददहनकान्तिश्चन्द्र(ण्ड)दन्तो(ण्डो) तिधृ(ह्व)ष्टः प्रणतसकलशत्रुर्विक्रमाक्रान्तभूमिः ।

भवति मणिसुवर्ण सर्वकार्यार्थसिद्धिः(द्धिं) प्रशमितगदकोपो वह्निजायं प्रभायां ।।

17. भूमिछायाफलम्

आज्यां(द्यां)बुसिक्तवसुवागुरुगन्धतुल्यः सुस्निग्धदन्तनखरोमशरीरकेशः ।

घर्था(घर्मा)र्थतुष्टिसुखभोज(भाग्य)नसंप्रियश्च छायां यदा भजति भूमि.तां मनुष्यः ।।

18. वातदोषफलम्

शीतांबुर्व(तार्तो ब)हुभाषको धृ(द्रु)तगतिर्भा(र्ना)वस्थितः कुत्रचित्

लोके(शुरोः) मत्सरवान् प्रचाररुचिकः सौभा (रुजाकररुचिर्दौर्भा) ग्ययुक्तोअनरः(यः)।

दान्तः स्या(दन्तान् खा)दति नातिसौहृदयमतिर्गान्ध र्ववेत्ता क्षमी(.शो)

मित्राणां समुपार्जनेतिनिपुणः स्वेप्ने च गे(खे) गच्छति।।

अप(ग)र(त)धृतिरूक्षश्मश्रुकेशः कृतघ्नः स्फुटितचरणहस्तः क्रोधजो नष्टकान्तिः ।

विलपति न निबद्धश्चित्र(त्त)संहारकारी भवति पुरुष एवं मारुतैकप्रधानः ।।

19. पित्तदोषफलम्

दुर्गन्धिर्ल(न्धी ल)घुको(ता)पनो विपुलधीः क्षिप्रप्रसादः पुनः

पीतो(नो) रक्तनखाक्षिपाणिचरणो वृद्धा.तिर्दाहवान् ।

मेधावी युधि निर्भयो हिमरुचिर्व्र(ब्रू)ते (नि)गृह्यापरान्

नो भीनेः(तः) प्रणयं प्रयाति बहुभुक् कुर्यान्नतानां प्रियं।।

स्वपनेअपि(भि)पश्यति सुवर्णदिशः प्र(नेश)दीपान् दावाद्रि(ग्नि)किंशुकजपामणिकर्णिकारान् ।

रक्ताब्जखण्डरुधिरौघतडित्समूहान् पित्ताधिको निगदितः खलु लक्षणज्ञैः ।।

20. कफदोषफलम्

श्रीमान्संश्लिष्टसन्धिर्धृतिबलसहितः स्निग्धकांतिः सुदेहो

ग्राही सत्वोअपपन्नो हतमुरुजघनः(ना)घोषदा(वान्) स्वस्तिहिष्णुः ।

गोरो रक्तान्तनेत्रो मधुररसरूचिर्बद्धवैरः .तज्ञः

क्लेशः स्यादत्तीव(शे– चाक्लिष्टचि)त्तः सकलजनहितः(सुहृत्) पुजको नो गुरूणी ।।

स्वप्ने तु पश्यति समुद्रनदीसरांसि

उपमान का नैदानिक एवं चिकित्सात्मक महत्त्व

- पल्लवी दीक्षित*, गोविन्द पारीक**, निशा गुप्ता***, कुलदीप जादव****

e-mail : dixitpallavi17@gmail.Com

सारांश–

आयुर्वेद में उपमान प्रमाण नैदानिक तथा चिकित्सकीय दोनों ही दृष्टि से अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि उपमा के द्वारा किसी भी विषयवस्तु को अति सुगमता व सरलता से समझाया जा सकता है। वर्तमान में संहितोक्त उपमाऐं केवल पठन–पाठन तक ही सीमित हो गयी है प्रायोगिक रूप से उनकी पहचान कर निदान व चिकित्सा में प्रवृत्ति नहीं हो पा रही है अतः उपमान के पुनर्स्थापन से आयुर्वेद के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की उपमाओं द्वारा उस विषयवस्तु से संबंधित जटिल विषयों को प्रकाशित कर उन्हें समग्र रूप से समझा जा सकता है। अतः आयुर्वेद में उपमान प्रमाण का विश्लेषणात्मक अध्ययन आज के परिप्रेक्ष्य में नितान्त आवश्यक है।

कुंजी शब्द – उपमान, नैदानिक, चिकित्सात्मक

प्रस्तावना–

उपमान को आयुर्वेद में दो रूपों में ग्रहण किया गया है। सुश्रुत संहिता में प्रमाण रूप में तथा चरक संहिता में वादमार्ग के अन्तर्गत। आयुर्वेद में चाहे उपमान को प्रमाण के रूप में ग्रहण किया जाए या वादमार्ग के रूप में ग्रहण किया जाए परन्तु इसकी उपयोगिता स्पष्ट हैं। आयुर्वेद की स्थापना ही सामान्यवाद पर हुई है। सामान्यवाद के लिए तुल्यार्थता हि सामान्यम् कहा गया है तथा इसी आधार पर ''पुरूषोऽयं लोकसम्मितः'' कहकर आयुर्वेद में लोकपुरूष सिद्धान्त की स्थापना की गई है। आयुर्वेद में मुख्यतः सादृष्यविषिष्ट पिण्डज्ञान उपमान का वर्णन ही किया गया है तथा हम भी सादृष्यविषिष्ट पिण्डज्ञान

उपमान के ही दृष्टान्त यहॉ प्रस्तुत करेंगे उपमा के माध्यम से किसी विषय का ज्ञान अत्यन्त सरल व स्पष्ट हो जाता है। इसलिए आयुर्वेद में स्थान–स्थान पर उपमा के माध्यम से आचार्य ने विषय को सरल व स्पष्ट करने का प्रयत्न किया हैं ताकि मंद बुद्धि वालों के लिए भी विषय समझ आ जाए व तीक्ष्ण बुद्धि वालों के लिए विषय अत्यधिक सुगम हो जाए इस प्रकार उपमान से सम्बंधित विषय को यहॉ प्रस्तुत किया जा रहा है।

उपमान–प्रमाण

''उपमितिकरणमुपमानम्''
संज्ञा–संज्ञि–सम्बन्धज्ञानमुपमितिः।
संज्ञानाम पदम् संज्ञी अर्थः, तयोः सम्बन्ध शक्ति।
तथा च पदपदार्थसम्बन्धज्ञानमुपमितिरित्यर्थः।

उपमिति के कारण को उपमान कहा जाता है। संज्ञा व संज्ञि के सम्बन्ध में ज्ञान को अर्थात् वाच्य–वाचकरूप सम्बन्ध ज्ञान को उपमिति कहा जाता है। संज्ञा 'पद' को तथा संज्ञि 'अर्थ' को कहा जाता है, एवं इन दोनों के सम्बध को शक्ति कहा जाता है। इसी को उपमिति कहा जाता है अर्थात् संज्ञा एवं संज्ञि का जो सम्बन्ध ज्ञान होता है वह उपमिति है। उपमिति का कारण सादृश्यज्ञान होता है। जैसे–किसी मनुष्य ने गवय को नही देखा है, परन्तु यदि वह इतना ज्ञान रखता है कि गाय के समान गवय होता है यदि बाद में वह व्यक्ति कभी वन में गया, वहॉ उसने वन में ऐसा जानवर देखा, जिसकी आकृति गाय के समान थी, तब उसे ज्ञात हुआ कि गाय के सदृश जो पशु होता है, उसे गवय कहा जाता है। यह पशु भी गाय के सदृश ही हैः अतः यह गवय ही होगा अथवा यह गवय ही है। इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करता है।

यहॉ पर अतिदेश वाक्यार्थ स्मरणानन्तर उत्पन्न होने वाले ज्ञान को उपमिति कहते है। यहॉ संज्ञा

**पी.एच..डी. अध्येत्री, **सहायक आचार्य, ***सहायक आचार्य, ****पी.जी. अध्येता, पी.जी. मौलिक सिद्धान्त एवं संहिता विभाग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर, राजस्थान–302002*

गवय को उपमिति नही कहा जा सकता है। अतः उपमान के लिए कहा गया है कि – उपमानं नामातिदेष वाक्यार्थज्ञानं। अतिदेश वाक्यार्थस्मरणं व्यापारः उपमितिः फलम्। अर्थात् अतिदेश वाक्यर्थज्ञान को उपमान कहते है। इसमें अतिदेश वाक्यार्थ स्मरण व्यापार है और उपमिति उसका फल है।

न्याय शास्त्र के उपर्युक्त विवरण से इतना स्पष्ट होता है कि – पहले से अनुभुत किसी वस्तु के साथ सादृश्य धारण करने के कारण जहॉ किसी नई वस्तु का ज्ञान उत्पन्न होता है उसे उपमान कहा जाता है अथवा प्रसिद्ध सादृश्य के बल पर जहॉ संज्ञा व संज्ञि का सम्बन्ध स्थापित किया जाता है उसे उपमान कहा जाता है।

अन्य दर्शनकार वैशेषिक, सांख्य, योग, जैन, बौद्ध आदि इसे स्वतंत्र प्रमाण मानकर त्रिविधि प्रत्यक्ष अनुमानादि के अन्तर्गत ही अन्तर्निहित मानते है परन्तु नैयायिक इसे स्वतंत्र प्रमाण मानने के पक्ष में कहते है कि–यह गवय है–इस विषय का ज्ञान गवय के प्रत्यक्ष मात्र होने से नहीं हो सकता है जब तक कि प्रत्यक्षकर्ता को यह ज्ञान न हो कि गवय गाय के सदृश होता है। क्योकि गवय का प्रत्यक्ष होना गवय–ज्ञान का कारण नही हैं, बल्कि गवय के प्रत्यक्ष होने पर गौ के सादृश्य का स्मरण अर्थात् जो लक्षण या आकृति गौ की होती है वही लक्षण अथवा आकृति गवय की भी होती है इसका स्मरण होना गवय ज्ञान के प्रति कारण होता है। यहॉ अर्थ का इन्द्रियों के साथ सम्बन्ध होना उतना महत्व नही रखता, जितना कि पहले से प्राप्त सादृश्य ज्ञान का स्मरण महत्व रखता है। अतः उपमान को स्वतंत्र प्रमाण के रूप में मानना पड़ता है।

अनुमान में अन्तर्निहित करने के विरोध में नैयायिक अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए कहते है कि उपमान को अनुमान में अन्तर्निहित नही किया जा सकता है, क्योंकि व्याप्ति के बिना अनुमान की सिद्धि नही होती है। तथा उपमान में व्याप्ति की आवश्यकता नही होती, क्योंकि गौ गवय में कोई साहचर्य सम्बन्ध नही हैं।

पुनः उनका कथन है कि उपमान शब्द प्रमाण भी नही हो सकता, क्योंकि शब्द प्रमाण में यह आवश्यक नही होता कि वह अर्थ, जिसका ज्ञान प्रमाता को करना होता है, प्रत्यक्ष ही हो। जब अर्थ प्रत्यक्ष ही हो जाय तो शब्द का कोई अर्थ नही रह जाता। इस प्रकार उपमान नैयायिकों का चौथा प्रमाण है। जिसे वे स्वतंत्र प्रमाण मानते है।

उपमान के भेद

तच्चोपमानं त्रिविधं– सादृश्यविशिष्ट पिण्डज्ञानं, असाधारण धर्मविशिष्ट पिण्डज्ञानं, वैधर्म्यविशिष्टपिण्डज्ञानञ्च।

1. सादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञान –

विशिष्ट पिण्ड–सादृश्य के आधार पर जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उसे सादृश्यविशिष्टज्ञान कहा जाता है। जैसे – गवय का ज्ञान गौ–सादृश्य के आधार किया जाता हैं। विशिष्ट पिण्ड गौ से सादृश्य धारण करने के कारण गवय का ज्ञान हो जाता है।

2. असाधारणधर्मविशिष्टपिण्डज्ञान–

असाधारणधर्मविशिष्टपिण्डज्ञान से तात्पर्य किसी असाधारण लक्षण से है, जिसके आधार पर ज्ञान होता है। जैसे– किसी व्यक्ति के द्वारा यह सुना गया कि खंगभृत हाथी के समान होता है तथा उसकी नाक के पास एक श्रृंग होता है। कुछ दिनों बाद वह व्यक्ति इस प्रकार का एक जानवर देखता है, जिसका आकार हाथी के समान तथा नाक के पास एक श्रृंग था। वह व्यक्ति के द्वारा यह ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है कि यह जानवर खंगभृत है। यहॉ वह व्यक्ति खंगभृत को नासिका के समीपवर्ती श्रृंग से पहचान पाया। यहॉ पर खंगभृत के नासिका का समीपवर्ती श्रृंग असाधारण धर्म है।

3. वैधर्म्यविशिष्टधर्मज्ञान–

यदि किसी की वस्तुवाचकता का ज्ञान उसकी विचित्रताओं विलक्षणताओं अथवा विशेषताओं के आधार पर किया जाता है तो उसे वैधर्म्य विशिष्ट धर्म ज्ञान कहा जाता है।

आयुर्वेद सम्मत उपमान का लक्षण

आचार्य सुश्रुत ने उपमान प्रमाण का उल्लेख किया है, परन्तु इसके लक्षण का उल्लेख नही किया है। डल्हणाचार्य उपमान के बारे में कहते है कि –

प्रसिद्धसाधर्म्यात् सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टार्थस्य साधनमुपमानम्। तेनाविरूद्ध यथा – माषवन्माषः, तिलमात्रस्तिलकालकः, विदारीरोगः विदारीकन्दवत् शालूकवत्पनसिकेत्यादिकम्।

(सु.सू.1/16; डल्हण)

अर्थात् किसी प्रसिद्ध वस्तु के सादृश्य से अप्रसिद्ध वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना उपमान कहा जाता है। जैसे – प्रसिद्ध माष से वनमाष का ज्ञान, तिल के सदृष्य तिलकालक रोग का ज्ञान, विदारीकन्द के सदृश्य विदारी – रोग का ज्ञान आदि।

चरकसंहिता में उपमान को स्वतंत्र रूप से प्रमाण नहीं माना गया है। परन्तु वादमार्ग में हेतु ज्ञान के उपाय–रूप में उपमान का उल्लेख किया गया है। तथा उपमान का लक्षण भी प्रस्तुत किया गया है।

अथौपम्यम्। औपम्यं नाम तद्यदन्येनान्यस्य सादृश्यधिकृत्य प्रकाषनम् यथा दण्डेन दण्डकस्य, धनुःस्तम्भस्य, इष्वासेनारोग्यस्येति। (च.वि.8/42)

किसी प्रसिद्ध वस्तु के सादृष्य से अप्रसिद्ध वस्तु का सादृश्य मिलान करके उसे प्रकट करने को उपमान कहा जाता है। जैसे – प्रसिद्ध वस्तु दण्ड के समान होने वाले रोग को सादृश्य के आधार पर दण्डक रोग के रूप में प्रकट करना उपमान कहा जाता है। योगेन्द्र नाथ सेन ने इसको और भी स्पष्ट करते हुए कहा है कि किसी अन्य प्रसिद्ध वस्तु के सादृश्य से उपमान द्वारा किसी अन्य अप्रसिद्ध वस्तु का प्रकाषन होता है चरकोक्त ''तद्यदन्येमनान्यस्य सादृश्यमधिकृत्य'' की व्याख्या करते हुए उपर्युक्त पक्तियों के माध्यम से आचार्य चक्रपाणिदत्त का कहना है कि – अन्येन का अर्थ कोई प्रसिद्ध वस्तु से लगाया जाता है तथा अन्यस्य से किसी अन्य अप्रसिद्ध वस्तु अर्थ होता है। सादृश्यमधिकृत्य का अभिप्राय संज्ञासज्ञि सम्बन्ध का सादृश्य या समानता के आधार पर प्रतिपादन करना है। इस प्रकार किसी प्रसिद्ध वस्तु के सादृश्य से अप्रसिद्ध वस्तु का ज्ञान संज्ञासंज्ञि सम्बन्ध रूप में किया जाता है उसे उपमान कहा जाता है। आचार्य चक्रपाणिदत्त उपमान के विषयरूप में सादृश्य प्रतिपत्ति मानते है। अर्थात् संज्ञासंज्ञि सम्बन्धज्ञान हेतु दोनों में सादृश्य का होना आवश्यक होता है। बिना सादृश्य–प्रतिपत्ति के ज्ञान लाभ नही हो सकता है। संज्ञा संज्ञि का सम्बन्ध ज्ञान उपमान का फल होता है। आयुर्वेद में इसके अनेको उदाहरण विद्यमान है। यथा – प्रसिद्ध वस्तु–धनुष के सादृश्य के आधार पर जिस रोग में वातदोष के कारण शरीर धनुष के समान हो जाता है उसे धनुःस्तम्भ कहा जाता है।

उपमान का रोगनिदान में उपयोग –

यदि वैद्य किसी रोग का नामकरण करने में समर्थ न हो तो उसे इसके लिए लज्जित नही होना चाहिए क्योंकि जगत में सभी रोगों का नामकरण सम्भव नहीं हैं। परन्तु कतिपय स्थितियॉ ऐसी होती है जब नववैद्यों को या शिष्यों को रोग–पहचान हेतु नामतः रोग का ज्ञान आवश्यक होता है। इस स्थिति में उस रोग का ज्ञान, सादृश्य के आधार पर होता है तथा प्रतिपत्तिज्ञान हेतु उपमान ही उपयोगी सिद्ध होता है। इसे निम्न उदाहरणों के माध्यम से बताया जा रहा है।

रक्तपित्त–

रक्तपित्त का पूर्वरूप – लोहलोहितमत्स्यामगन्धित्वमिव चारूपस्य,

शुक्ताम्ल गन्ध उद्गारः। (च.नि.2/6)

रक्तपित्त की असाध्यता – शक्रधनुष्प्रभम्।

(च.नि. 2/24)

पित्तज रक्तपित्त का लक्षण – रक्तपित्तं कषायाभं कृष्णं गोमूत्र सन्निभम्।

मेचकागार धूमाभं अन्जनाभं च पैत्तिकम्।।

(च.चि. 2/12)

गुल्म–

गुल्म की निरूक्ति–स पिण्डतत्वाद् गुल्म इत्यभिधीयते। (च.नि. 3/7)

वातज गुल्म का लक्षण– मुहुः पिपीलिकासंप्रचार इवांगेषु सूच्येव शंकुनेव। (च.नि. 3/7)

पित्तज गुल्म का लक्षण –

सधूममिवोद्गार मुद्गिरत्यम्लान्वितं। (च.नि. 3/9)

त्रिदोषज गुल्म का लक्षण – अष्मवद्घनोन्नत।

(च.चि. 5/17)

प्रमेह–

कफज प्रमेह के लक्षण– (च.नि. 4/12–22)

उदकमेह– अच्छं बहु सितं शीतं निर्गन्धमुदकोपमम्।

इक्षुवालिकामेह– अत्यर्थमधुरं शीतं ईषत्पिच्छिलमाविलम् काण्डेक्षुरससकाषं।

शुक्रमेह – शुक्राभं शुक्रमिश्रं वा महुर्मेहति यो नरः।

सिकतामेह– मूर्तान्मूत्रगतान् दोषान् अणून्मेहति यो नरः।

आलालमेह– तन्तुबद्धमिवालालं पिच्छिलं यः प्रमेहति।

पित्तज प्रमेह के लक्षण– (च.नि. 4/29–34)

क्षारमेह– गन्धवर्णरसस्पर्षैर्यथा क्षारस्तथाविधम्।

कालमेह– मसीवर्णं।

नीलमेह– चाषपक्षनिभं।

रक्तमेह– विस्त्रं लवणं उष्णं च रक्तं मेहति यो नरः।

मजिष्ठमेह– मजिष्ठोदकसंकाशं।

हारिद्रमेह– हारिद्रोदकसंकाशं कटुकं यः प्रमेहति।

वातजमेह के लक्षण–(च.नि. 4/41–44)

वसामेह– वसाभं

हस्तिमेह– हस्तीमत्तं इवाजस्त्रं मूत्रं क्षरतियोभृषम्।

मधुमेह– कषायमधुरं पाण्डु सक्षं मेहति यो नरः।

कुष्ठ–

महाकुष्ठ के लक्षण–(च.नि. 5/)

कपाल– कृष्णारूण कपालवर्णानि, तनून्युद्वृत्तवहिस्तनूनि।

उदुम्बर– पक्वोदुम्बरफल वर्णानि।

मण्डल – परिमण्डलानि।

ऋष्यजिव्ह– ऋष्यजिव्हाकृतीनि बहिरन्तः श्यावानि।

पुण्डरीक – पुण्डरीक पलाश संकाषानि।

सिध्म– अलाबु पुष्पसंकाशानि।

काकाणक – काकणन्तिका वर्णान्यादौ।

दद्रुकुष्ठ – अतसीपुष्पवर्णानि। (सु.नि. 5/8)

क्षुद्रकुष्ठ के लक्षण– (च.चि. 7/21–22)

एक कुष्ठ – यन्मत्स्यशकलोपमम्।

चर्मकुष्ठ – बहलं हस्तिचर्मवत्।

किटिभकुष्ठ – किणखरस्पर्शं।

उन्माद पूर्वरूप– अर्दिताकृतिकरणं च व्याधेः।

(च.नि. 7/6)

उदर रोग के लक्षण–(च.चि. 13/25–41)

वातोदर– आध्मात दृतिशब्दवद्भवति

प्लीहोदर – तस्य प्लीहा कठिनोऽष्ठीलेवादौ वर्धमानः कच्छपसंस्थान उपलभ्यते।

जलोदर– उदकपूर्णदृतिसंक्षोभसंस्पर्शत्व च।

बद्धुगुदोदर– यो प्रायो नाभ्युपरिगोपुच्छवदभिनिवर्तत इति।

कामला के लक्षण–

कामला का लक्षण– भेकवर्णो। (च.चि. 16/35)

शाखाश्रित कामला का लक्षण – तिलपिष्टनिभं यस्तु वर्चः सृजति कामली। (च.चि. 16/124)

महाश्वास– उच्चैः श्वसिति संरूद्धो मत्तर्षभ इवानिषम्। (च.चि. 17/73)

कास के लक्षण–

पित्तज कास– उरोधूमायनं। (च.चि. 18/15)

क्षतज कास– पारावत इवाकूजन (च.चि. 18/23)

अतिसार–

सन्निपातज अतिसार का लक्षण – हारिद्र हरितनील मन्जिष्ठमांस धावन सन्निकाश

रक्तं कृष्ण श्वेतं वराहमेदःसदृश।

सन्निपातज अतिसार की असाध्यता–पक्वंशोणिताभं, यकृत्खण्डोपमं, मेदमांसोदकसन्निकाशं,

दधिघृतमज्जतैलवसाक्षीरवेसवाराभं, पुनर्मेचकाभं, कुर्बरमाविलं,

चन्द्रकोपगतमति कुणपपूतिपूयगन्धी– आममत्स्यगन्धि।

(च.चि.19/9)

विसर्प संज्ञा– विविधं सर्पति यतो विसर्पस्तेन स स्मृतः। (च.चि.21/11)

अग्निविसर्प का लक्षण– शांतांगारप्रकाशोऽतिक्तो वा भवति। (च.चि.21/36)

कर्दम विसर्प का लक्षण– मेचकाभः, कुणपगन्धी। (च.चि.21/38)

मद की तृतीय अवस्था– भग्नदार्विव निष्क्रियः। (च.चि.24/48)

सन्निपातज मद का लक्षण– मदो मद्यमदाकृतिः। (च.सू.. 24/33)

कफज मूर्च्छा का लक्षण– गुरूभिः प्रावृतैरंगैर्यथैवाद्रेण चर्मणा। (च.सू. 24/40)

बहिरायाम का लक्षण– वायुः कुर्यात् धनुस्तम्भं बहिरायाम संज्ञकम्। (च.चि.28/46)

दण्डक का लक्षण– दण्डवत्स्तब्धागात्रस्य दण्डकः।(च.चि.28/51)

शुद्ध आर्तव का लक्षण– गुंजाफल सवर्णं च पद्मालक्तकसन्निभम्।

इन्द्रगोपकसंकाशमार्तवं शुद्धमादिशेत्।। (च.चि. 30/226)

शुद्ध शुक्र का लक्षण– स्फटिकसन्निभम् । (च.चि. 30/145)

प्रदर के लक्षण–

वातज प्रदर– किंशुकोदक संकाशं । (च.चि. 30/212)

त्रिदोषज प्रदर– सर्पिर्मज्जवसोपमम्। (च.चि. 30/223)

ध्वजभंग का लक्षण– पुलाकोदक संकाशः स्त्रावः। (च.चि.30/170)

अपतन्त्रक का लक्षण– कपोत इव कूजन। (च.सि. 9/14)

हृदय शूल के लक्षण–

कफज हृदय शूल– भवत्य अश्मावृतं । (च.सू. 17/135)

कृमिज हृदय शूल– तुद्यमानं स हृदयं सूचीभिरिव मन्यते।

छिद्यमानं यथा शस्त्रैर्जात कण्डू महारूजम्।

(च.सू.17/39)

प्रमेह पिडका के लक्षण– (च.सू.17/84–89)

शराविका – अन्तोन्नता मध्यनिम्ना, शरावाकृति संस्थिता।

कच्छपिका– महावस्तुपरिग्रहा, कच्छपपृष्ठाभा।

जालिनी– सिराजालवती, सूक्ष्मछिद्रा, महाषया।

सर्षपी – पिड़का नातिमहती, क्षिप्रपाका महारूजा, सर्षपाभानिः।

अलजी– विसर्पत्यनिषं दुःखाद्दहत्यग्निरिवालजी।

विनता– पृष्ठेवाऽप्युदरेऽपि वा महती नीलापिड़का।

विद्रधि – कण्डराभा, महारूजा।

ओज का स्वरूप– सर्पिवर्णं, मधुरसं लाजागन्धि प्रजायते। (च.सू. 17/75)

वातज शोथ का लक्षण– सूचीभिरिव तुद्यते, पिपीलिकाभिरिव संसृप्यते,

सर्षपकल्कावलिप्त इव चिमिचिमायते। (च.सू. 18/6)

वातरक्त का स्वरूप– आखोर्विषमिव क्रुद्ध तद्देहमनुसर्पति। (सु. नि. 1/48)

हिक्का श्वास का स्वरूप– क्रुद्धो हत आशीविषाविव। (च.स. 17/9)

आमवात का स्वरूप– रूज्यतेऽत्यर्थं व्याविद्ध इव वृश्चिकैः। (मा.नि.25/8)

अर्श का स्वरूप– (सु.नि.2/11–14)

वातज अर्श – कदम्बपुष्प, तुण्डिकेरी, नाड़ी, मुकुल, सूचीमुखाकृतीनि च भवन्ति।

पित्तज अर्श – यकृतप्रकाषानि, शुकजिव्हासंस्थानानि, यवमध्यानि, जलौका वस्त्रसदृषानि।

कफज अर्श – करीरपनसास्थि, गौस्तनाकराणि, मांसधावनप्रकाशं अतिसार्यते।

रक्तज अर्श – न्यग्रोधप्ररोहविद्रुमकाकणन्तिका फलसदृशानि।

गुदवली की स्थिति– शंखा वर्तनिभाश्चापि उपर्युपरि संस्थिताः। (सु.नि.2/6)

गुदवली का वर्ण– गजतालुनिभाश्चापि वर्णतः सम्प्रकीर्तिता। (सु.नि.2/7)

मूत्राशय का स्वरूप – अलाब्वा इव रूपेण। (सु. नि. 3/20)

अश्मरी–

अश्मरी का पूर्वरूप – बस्तगन्धित्वं मूत्रस्येति। (सु. नि.3/5)

अश्मरी का लक्षण – गोमेदक प्रकाषमत्याविलं ससिकतं विसृजति। (सु.नि.3/7)

अश्मरी का स्वरूप – (सु.नि.3/8–10)

कफज अश्मरी – कुक्कुटाण्डप्रतीकाषा, मधूकपुष्पवर्णा।

पैत्तिक अष्मरी – भल्लातकास्थि प्रतिमा, मधुवर्णा।

वातज अश्मरी – कदम्बपुष्पवत्, कण्टकाचिता।

भगन्दर के लक्षण– (सु.नि.4/5–8)

शतपोनक– शतपोनकवदणुमुखैष्छिद्रैरापूर्यते।

उष्ट्रग्रीव – उष्ट्रग्रीवाकारां पिडका।

शम्बूकावर्त– पादांऽगुष्ठप्रमाणां पिडका।

पूर्णनदीषम्बुकावर्तवच्चाऽत्र समुत्तिष्ठन्ति वेदना विषेषाः।

विद्रधि के लक्षण–

पित्तज विद्रधि – पक्वोदुम्बर संकाश।

कफज विद्रधि – शरावसदृश।

आभ्यान्तर विद्रधि – गुल्मरूपिणम्, वल्मीकवत्समुन्नत।

पित्तज विद्रधि स्त्राव – तिलमाषकुलत्थोदकसन्निभं। (च.सू.17/99)

त्रिदोषज विद्रधि लक्षण – शस्त्रास्त्रैर्भिद्यत इव चोल्मुकैरिव दह्यते।

विद्रधी व्यम्लतां याता वृश्चिकैरिव दष्यते। (च.सू. 17/98)

विसर्प के लक्षण– (सु.नि. 10/4–7)

वातज विसर्प – गण्डैर्यदा तु विषमैः।

पित्तज विसर्प – कर्दमनिभो।

त्रिदोषज विसर्प – स्फोटैः कुलत्थसदृष।

ग्रन्थि के लक्षण– (सु.नि.11/4–7)

वातज ग्रन्थि – बस्तिरिवातत।

पित्तज ग्रन्थि – दन्दहय्ते धूप्यति चूष्यते च पापच्यते प्रज्वलतीव।

कफज ग्रन्थि – पाषाणवत् संहननोपपन्नः।

मेदज ग्रन्थि – पिण्यांक सर्पिः प्रतिमं।

वृद्धि के लक्षण– (सु.नि.12/6)

वातज वृद्धि – बस्तिमिवाततां।

पित्तज वृद्धि – पक्वोदुम्बरसंकाषां।

मेदोवृद्धि – तालफलप्रकाशां।

मूत्रवद्धि – अम्बुपूर्णा दृतिरिव।

अपची के लक्षण– मत्स्याण्डजालप्रतिमः। (सु.नि. 11/11)

गलगण्ड का स्वरूप–मुष्कवल्लम्बते गले। (सु.नि. 11/29)

पित्तज उपदंश– पक्वोदुम्बरसंकाशां। (सु.नि.12/9)

कफज श्लीपद– कण्टकैरूपचितं। (सु.नि.12/11)

क्षुद्ररोग के लक्षण– (सु.नि.13)

अजगल्लिका– मुद्गसन्निभा।

यवप्रख्या – यवाकारा।

विवृता – पक्वोदुम्बर सन्निभाम्।

कच्छपिका– ग्रथिताः पंच वा षड् वा दारूणाः कच्छपोन्नता।

वल्मीक– ग्रन्थिर्वल्मीकवद्यस्तु शनैः समुपचीयते।

इन्द्रवृद्धा – पद्यमपुष्करवन्मध्ये पिडकाभिः।

पनसिका– शालुकवत्।

जालगर्दभ– विसर्पवत् सर्पति।

विस्फोटक– अग्निदग्धनिभाः स्फोटाः।

विदारिका– विदारीकन्दवत्वृत्ता।

शर्कराबुर्द– मधुसर्पिवसानिभम्।

कदर– कोलमात्रः

मुखदूषिका – शाल्मलीकण्टकप्रख्याः पिडका।

चर्मकील– कीलवदर्षांसि। (सु.नि.2/19)

कक्षा – यज्ञोपवीतप्रतिमाः। (च.चि. 12/91)

मसूरिका– मसूरमात्रा। (च.चि. 12/93)

शूकदोष के लक्षण– (सु.नि.14)

सर्षपिका – गौरसर्षपतुल्या पिड़का।

कुम्भीका– जाम्बवास्थिनिभा।

पुष्करिका – पदमपुष्करसंस्थाना पिड़िका।

उत्तमा– मुद्गमाषोपमा रक्ता पिड़का।

उपसंहार–

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि निदानार्थ व चिकित्सकीय वैशिष्ट्यार्थ सम्पूर्ण आयुर्वेद वांङ्गमय उपमान रुपी आधार पर टिका हुआ है। अतः वर्तमान परिपेक्ष्य में आयुर्वेदोक्त तत्कालीन प्रसिद्ध उपमाओं का पुनर्स्थापन व पुर्नस्मरण करवा कर वास्तविक स्वरुप में आयुर्वेद के निदानात्मक व चिकिसात्मक पक्ष को सुदृढ़ किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. चरक संहिता श्री चक्रपाणिदत्त विरचित आयुर्वेद दीपिका, आचार्य यादव जी त्रिकम जी द्वारा सम्पादित टीका, चौखम्बा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी, 2014
2. सुश्रुत संहिता श्री डल्हणाचार्य विरचिता निबन्ध संग्रहाख्यव्याख्यया आचार्य त्रिविक्रमात्मजेन यादवषर्मणा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी, 2014
3. भारतीय दर्शन, बलदेव उपाध्याय, प्रथम संस्करण, शारदा मंदिर वाराणसी, 2011
4. पदार्थ विज्ञान, बी. के, द्विवेदी, चौखम्भा कृष्ण दास अकादमी, वाराणसी, तृतीय संस्करण, 2007.

MENTAL HEALTH AND INDIAN CULTURE

- Usha Dwivedi*
e-mail : ushadwivedi572@gmail.com

INTRODUCTION :

Until the advent of 20th century, Indians were known for their strong will power, sound mental health and unmatched optimism. They were the men of simple living and high thinking. But with passage of time, tables have turned – India has now become one of the most depressed countries of the world.

According to a study conducted by national commission on macro-economics and health in 2005, nearly 5% of Indian population suffers from common mental disorders such as depression and anxiety. WHO stats say that the average suicide rate in India is 10.9 for every lakh of people. A survey of epidemiological studies in 2000 estimated that the prevalence of mental disorders in India was 70.5 per 1000 in rural and 73 per 1000 in urban population. A survey of 2002 revealed that the prevalence rate of mental disorders in Indian industrial population is 14 to 37%.

Depression is the most common form of mental illness, about 36% of Indians are likely to suffer from major depression in some points of their lives. It is estimated that 3 of every 100 people in urban areas have suffered this and 1 out of every 3 such people are severely neurotic. Mental depression is mostly characterized by altered mood.

A person is said to be depressed if he has a low-mood every day, markedly diminished interest in all usually pleasurable outlets such as food, work, friends, hobbies or entertainment and 3 or more of the following characteristics must also be present –

1. Poor appetite or significant weight loss or increased weight gain
2. Insomnia or hypersomnia
3. Psychomotor agitation or retardation
4. Feeling of hopelessness
5. Loss of energy or fatigue
6. Feeling of worthlessness, self-reproach or excessive guilt
7. Complaints of diminished ability to think or concentrate
8. Recurrent thoughts of death, suicide or wish to be dead

Considering all this information, the position of rural mental health is even more grisly. The reason is – maximum population of India (about 72%) is still living in villages. Once, their lives were very simple, their necessities were legitimate and above all, they were optimistic. What happened to them? Whereby the situation has changed? The answer is quite evident – western culture, which has sneaked into our villages, after victimizing the urban population.

If we talk about the urban population, the situation is even direr. Teenagers are becoming most common victims of depression, anxiety, personality disorders, etc. The old and the adult

**Associate Professor, Department of Kriya Sharir, LBS Govt. Ayurveda College, Handia, Allahabad.*

are also suffering from mental illness in various forms and at varying levels. In medical science, mental health problem is the most challenging as compared to other disorders. Why? Because of ignorance at every level – be it personal, social or governmental. The sufferer of common mental illness never accepts the fact that he or she is a patient, especially in early stages. Moreover, the response of family members and the society is even worse – to them, the victim is 'faking' the illness, most of the times. At the level of government, experts point out that there is a severe shortage of mental health professionals and facilities in India.

Healthy people are an asset for the country. Ailment at any level – be it physical or mental, decreases working efficiency on one hand and increases health expenditure on the other hand. On careful observation, issue of mental health is somehow connected with the social fabric, the traditions, the culture and the religious practices.

Social Fabric and Mental Health –

Concept of joint family was a unique characteristic of Indian social fabric. But unfortunately under the influence of modernization, this fabric is unwinding quite rapidly. The victims of nuclear families, born out of this rapid modernization are, primarily – the elderly and the children.

A child learns most of the social, ethical and moral values from his/her family members. Children feel more secure and happy with their grandparents and cousins. It is believed that a child who grows up in a joint family is very enthusiastic, has strong will power and can easily overcome unfavorable situations.

The old members of the family used to be the idea banks and motivators for the younger ones. They were good patrons and initial teachers of their grandchildren. The elderly are now being ignored to such extents that they are constrained to live in old age homes, while toddlers are forced to spend their days in crèche. Ironically, this is the situation of a country which once used to proclaim – "Vasudhaiv Kutumbakam".

Religious Observance –

Retentive qualities and acts which are always pleasurable for others is Dharma or religion. Dhrama is a pious concept, contemplated to infuse moral and ethical values in human beings to spread love, peace and fraternity. Religious philosophy teaches us that all good or bad happens by the will of god. In Shrimad Bhagwad Gita, it is said that – "Do your karma, don't think about the result". Results according to your deeds are bound to follow, as God is omnipresent and omnipotent. It is worthwhile to mention that everybody is bound to do work or Karma, as no one can survive in the mortal word without Karma. Lord Krishna says – "Dedicate all your failures and successes to me and you will be free from all fastenings".

A study was carried out from year 1996 to 2012, on adult women to know the correlation between religiousness and health. The results were quite positive. Few days back, scientists of California have revealed that Yoga, meditation and chanting hymns is helpful in treating Alzheimer patients. It is also noted that life style of a religious person is more regular than an atheist. They recover much more quickly from any kind of illness. This direct proportionality between religiousness and health might have

multiple reasons. But the only logical explanation is that pious men realize that they are always blessed by the almighty and this believe gives them a psychological advantage in worst situations. Such thinking gives them a ray of hope and a sense of optimism, that God will turn the tide. This helps them overcome inhospitable situations without mentally breaking down.

The success of an effort doesn't only need hard work. There are so many other factors involved such as – nature of goal, time of effort, means, method, abilities, etc. and eventually, destiny must be on your side. The concept of destiny and karma in Indian philosophy is actually a positive approach for success and failure both. We should always work as the servant of almighty. When we work according to this philosophy, we don't consider ourselves as the doer or the master – we are merely the medium, which is being used by the almighty to run his errands. Such views for work-result, failure-success help us maintain our mental balance in most unfavorable circumstances.

Moral Conduct –

Those times have long gone when a person was valued in terms of his morals and ethics. People were earlier known for keeping their word and donating their whole living to those in need. Unfortunately, today's youth has turned a blind eye towards moral and ethical values. Money is the sole ambition and purpose of their lives. No doubt, money is essential to meet physical needs. It is almost indispensable in today's world. But one cannot buy everything with money. You cannot purchase inner satisfaction or happiness or lost youthfulness from money. You cannot bring back the dead and you cannot make up for lost time using money. So, it is rightly said that money is a good servant but a mad master.

In this era of cut throat competition in every field, one who wants to win has to work day and night. In this rat race, life however, has become unbalanced. The value of life, its aim, its direction, its ideals and goals – everything is reflected in one's daily routine. One whose daily routine is haphazard and disorderly, remains confused and aimless in the larger scheme of life too. Haphazard routine not only ruins health but gives birth to serious mental problems as well. Physiologists and psychologists are convinced that man will have to suffer direct consequences of tempering with the biological rhythm ordinated by nature.

Cultural Effect –

The culture of India a way of living in itself. Various elements of Indian culture such as religion, philosophy, music, dance forms, festivals etc. have a profound impact on health. In the hour of despair music can fill courage to fight the battle of life. Music is a tonic to our mind, a gush of fresh wind for our morale and peace to soul. The effect of music on health has been analyzed and hence, psycho patients are being treated with music these days.

The Indian art of dance is the expression of inner beauty and divinity in man. It tunes mind and body together. India is known as the country of festivals. Our festivals spread the message of victory of divine over devil, light over darkness, and love over hate. Festivities make people forget their worries and inject new hope and vigor for the future.

Food is a momentous part of our culture and life both. In India, food varies from region to region, reflecting local production, cultural diversity and varied demographics of the country. In Bhagwat Gita, diet is classified as Satvic, Rajas and Tamas, on the basis of mental constitution.

1. Satvic Food – Fresh fruits, nuts, vegetable, milk, boiled and roasted food promote satvic guna (qualities) which induce forgiveness, compassion, intelligence, courage, strong determination, good memory etc. These people are devoid of any lust, delusion, infatuation and hatred.
2. Rajas Food – Oily, spicy, salty, non-vegetarian and canned food promotes Rajas guna which induces aggression, strength, sharpness, unsteadiness and anger. These people show quickness in action, impatience, love for adventure and sensuousness. They are good debaters and face fear courageously.
3. Tamas Food- Prohibited, stale, more oily and spicy, over cooked, fermented and virudha ahar (ill-matched food) promotes tamas guna which induces dullness, inertia, fearfulness and slowness in all activities. These people are devoid of truthfulness and righteousness. They are lusty and their sole ambition is wealth.

That's why it is said – As we eat, so is our mind.

The glare of wondrous advancement in science and technology in different spheres, man has started considering himself as the almighty and is constantly ignoring spiritual and human values. Therefore he has lost his peace of mind, value of ethics and inner satisfaction. All the material and physical prosperity is worthless if we have no serenity of mind. Now the time has come to tell the significance of religious rites, values, objective of man's creation and existence, which are virtue, wealth, gratification and emancipation, to our new generation. We will have to tune health and wealth together for the betterment of human life.

References :

1- Charak Sanhita

2- Shrimad Bhagwat Gita

3- Sushruta Samhita.

CONCEPT OF YOGA AND MOKSHA

- Roshni K. P.*

e-mail : roshnibalesh@yahoo.co.in

ABSTRACT :

Yoga encompasses variety of system of philosophy –based practices which outline how an individual can unite body, mind, and soul, or his or her actions and thoughts with divinity, in the quest for moksha . The term yoga is from the Sanskrit language and means union. While many people around the world associate yoga with physical exercises, they may not be aware of the other, often considered more important aspects, that are integral to a variety of Yogas. These aspects may include moral values ethical practices breathe, meditation, posture, focused awareness, devotion and worship of God scriptural study.

Moksha is a concept associated with birth-rebirth cycle originated with new religious movements in the first millennium. These new movements such as Buddhism, Jainism and new schools within Hinduism, saw human life as bondage to a repeated process of rebirth. This bondage to repeated rebirth and life, each life subject to injury, disease and aging, was seen as a cycle of suffering. By release from this cycle, the suffering involved in this cycle also ended. This release is called moksha, nirvana, kaivalya, mukti and other terms in various Indian religious traditions

KEY WORDS

Yoga, Moksha, Kaivalya, Jeevatma, Paramatma

INTRODUCTION

In Sanskrit, yoga (from the root yuj) means "to add", "to join", "to unite", or "to attach" . There are very many compound words containing yoga in Sanskrit. Yoga can take on meanings such as "connection", "contact", "union", "method", "application", "addition" and "performance". In simpler words, Yoga also means "combined". The origins of yoga are a matter of debate. There is no consensus on its chronology or specific origin other than that yoga developed in ancient India. Suggested origins are the Indus Valley Civilization (3300–1900 BC) and pre-Vedic Eastern India, the Vedic period (1500–500 BC).

Moksha (Sanskrit: eks{k] mokca), also called vimoksha, vimukti and mukti, is a term in Hinduism and Hindu philosophy which refers to various forms of emancipation, liberation, and release. In its stereological and eschatological senses, it refers to freedom from samsara, the cycle of death and rebirth. In its epistemological and psychological senses, moksha refers to freedom from ignorance: self-realization and self-knowledge.

In its historical development, the concept of moksha appears in three forms: Vedic, yogic and bhakti forms. In Vedic period, moksha was ritualistic. Moksha was claimed to result from properly completed rituals such as those before Agni - the fire deity. The significance of these rituals was to reproduce and recite the cosmic

**H.O.D., Deptt. of Kriyasharira, Sri Jayendra Saraswathi Ayurveda College, Nazrathpath, Chennai, Tamil Nadu.*

creation event described in the Vedas; the description of knowledge on different levels - adhilokam, adhibhutam, adhiyajnam, adhyatmam - helped the individual transcend to moksa. Knowledge was the means, the ritual its application. By middle to late Upanishadic period, the emphasis shifted to knowledge, and ritual activities were considered irrelevant to attainment of moksha. Yogicmoksha replaced Vedic rituals with personal development and meditation, with hierarchical creation of the ultimate knowledge in self as the path to moksha. Yogic moksha principles were accepted in many other schools of Hinduism.

DIFFERENT CONCEPTS OF YOGA & MOKSHA

Patanjali define Yoga as ChithavrithiNirodhah. One who is affected by Ragadi bhavas will have a feeble mind. The practice by which it can be read and pacified by keeping it in one point of meditation (as called yoga) and attainment of such an aim is called yoga. Some are of the opinion that yoga is union of Prana and Apana. Some other says that it is union of Jeevathma and Paramathma. Still another opinion is that yoga as union of Manas and Budhi. One is said to have yoga lakshana when he does not become depressed over loss, defeat, and grievance.

In Ayurveda yoga is mentioned as a means to attain self realization.

In bagavatgeeta equanimity of mind is mentioned as yoga lakshana.

योगस्थकुरुकर्माणिङ्गंत्यक्त्वाधनञ्जय।

सिद्धयसिद्धयौसमोभूत्वासमत्त्वंयोगउच्यते ।। (भ. गीता)

One should do his Karma abandoning the thought of victory or defeat, the mental equilibrium that one achieves whether he succeed or not in the attainment of knowledge is called yoga .

आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानांसन्निकर्षात्प्रवर्तते ।

सुखदुःखमनारम्भात्आत्मस्थेमनसिस्थिरे ।

निवर्ततेतदुभयंवषित्वंचोपजायते ।। (चरक सूत्र)

Happiness and miseries are felt due to contact of soul, sense organs, mind and objects of senses. Both these types of sensations disappear when the mind is concentrated and contained in the soul and supernatural power in the mind, body are attained. This state is known as yoga. The ultimate aim of yoga in the supreme purushartha is moksha. Recurrence of all sensation is checked through yoga and moksha. The absolute eradication of sensation is attained through moksha. Yoga is a means to attain moksha. The absence of sensation in the state of yoga is temporary. It reoccurs immediately after the state of yoga is disturbed.

But moksha leads to absolute eradication of sensations. Eight supernatural powers of Yogins are 1) entering others body 2) Thought reading 3) Doing things at will 4) Supernatural vision 5) Supernatural audition 6) Miracles memory 7) Uncommon brilliance 8) Invisibility when so desired. All these are achieved by the purity of mind. That is free from Tejas&Tamas

Moksha

योगेमोक्षेसर्वासांवेदनानामवर्तनंमोक्षेनिवृत्ति–
निःशेषःयोगोमोक्षप्रवर्तकः।

(चरक. शारीर 1)

Moksha (Salvation) is the unity with the supreme self it implies absolute detachment of the soul from all mental as well as physical contacts.

The word moksha is otherwise called Kaivalya or Paramapadaprapthi .It is used in the sense that the Supreme being in its absolute sense becomes free from Jeevabhava.

The soul of worldly being affected with Kama,Krodha. etc is of Jeevabhava. When one attain salvation, Jeevabhava is lost and Atmaswaroopa or Bramhaswaroopa is attained.

Moksha in Ayurveda

मोक्षोरजस्तमोशषभावात्बलवत्कर्मसंशयात् ।
वियोगःसर्वसंयोगैरपुनर्भवउच्यते ।। (चरक शारीर 1)

Moksha or salvation is an absolute detachment of all contacts by virtue of the absence of rajas and tamas in the mind and annihilation of effects of potent past actions. This is a state after which there are no more physical or mental contacts.

In charaka samhita, means of attainment of moksha is described as devotion to noble souls, sharing the company of wicked, observing seared laws etc.. All this can be attained by virtue of the constant remembering of the fact that soul is different from body and the later has nothing to do with the former.

Concept of moksha according to Nyaya

There must be a future where we can experience the fruits of our deeds and a past to accounts for the difference in one lots in the present. When our lust is completely exhausted, our soul is freed from samsara and rebirth and attains release or Moksha

Moksha is (the supreme felicity marked by perfect tranquillity and freedom from defilement) (violation). It is not the destruction of self but only of bondage. Moksha according to Nyaya, is complete cessation of effort, activity, and consciousness and absolute cessation of the soul from body and mind. This state of pure existence which the liberated souls attain is compared to the state of deep dreamless sleep.

Vaisheshika concept regarding Yoga

According to vaisheshika, spiritual growth requires supervision of self. It states yoga as a means for self-control. Only a selfless insight into the truth of things can secure final release. Vaisheshika theory of moksha differs from that of Nyaya. The soul in the state of liberation is absolutely free from all connections with qualities and submits like the sky free from all conditions and attributes. The state of moksha cannot be considered as one stage of pleasure

Sankhya philosophy about Moksha

Salvation in the sankhya system is only phenomenal, since bondage does not belong to pursuit. Bondage and release refer to the conjunction and disjunction of purusha and prakriti

While bondage is the activity of prakriti towards one not possessing discrimination, release is the inactivity towards one possessing discrimination.

Haribhadra

The union of purusha with sub body is the cause of samsara and salvation is attained through the breaking of the union by means of knowledge.

At death the Jeevanmuktha attain complete liberation or disembodied isolation

According to Yoga Philosophy

As in Samkhya, so in yoga, the round of rebirth, with its many pairs is that which is to be escaped from and the conjunction of Pradhana and self.

Liberation in isolation of purusha from prakriti to be attained by discrimination between the two. While Samkhya holds that knowledge is means of liberation, yoga insists on the methods of concentration and active straining. The aim of yoga is to free the individual from the clutches of matter. The highest form of matter is chitta, and yoga lays down the course by which a man can free himself from fetters of chitta. By withdrawing chitta from its natural functions, we overcome the pain of world and escape from samsara.

Upanishad view about Moksha

The Upanishad view about Moksha is that it is the highest state of religious realization, the attainment with supreme godhead, a mere vanishing into nothingness.

Moksha is the unity with the supreme self. It implies absolute detachment of the soul from all.

CONCLUSION

The ultimate goal of Yoga is moksha (liberation), although the exact definition of what form this takes depends on the philosophical or theological system with which it is conjugated

Yoga, is an analysis of perception and cognition; illustration of this principle is found in Hindu texts such as the Bhagavad Gita and Yogasutras, as well as a number of Buddhist Mahâyâna works

According to Mahabharata, Yoga is the rising and expansion of consciousness.

Yoga, is a path to omniscience; examples are found in Hinduism Nyaya and Vaisesika school texts as well as Buddhism Mâdhyamaka texts, but in different ways;

Yoga, is a technique for entering into other bodies, generating multiple bodies, and the attainment of other supernatural accomplishments; these are described in Tantric literature of Hinduism and Buddhism.

Nirvana and moksha, in all traditions, represents a state of being in ultimate reality and perfection, but described in a very different way. Some scholars, assert that the Nirvana of Buddhism is same as the Brahman in Hinduism. In Buddhism, nirvana is 'blowing out' or 'extinction'. In Hinduism, moksha is 'identity or oneness with Brahman. Realization of anatman is essential to Buddhist nirvana. Realization of atman is essential to Hindu moksha

REFERENCES

1. Agnivesha-Charakasamhita revised by Charaka and Dridhabala with commentary of ChakarapaniDatta edited by YadavjitrikamjiAcharaya, Sootrastana chapter-1
2. Yogasootra - SadhanaPada
3. Shankara, Sarvavedantasiddhantasara
4. N.S.S. Raman (2009), Ethics in Bhakti Philosophical Literature, in R. Prasad - A Historical-developmental Study of Classical Indian Philosophy of Morals
5. Hatha Yoga "Hatha Yoga – Art of Living"
6. The Yoga Sutras of Patanjali
7. Chandogya Upanishad
8. The Upanishads, The Sacred Books of the East – Part 1,

कादम्बरी में वनस्पतियों का एक परिचय

- ज्योति शुक्ला*, श्याम सुन्दर**, भुवाल राम***
e-mail : shuklajyoti2016@gmail.com

प्रस्तावना–

वनस्पतियों का प्रादुर्भाव पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति के पूर्व में ही हो चुका था। अतः मनुष्यों को जन्म से ही वनस्पतियों का संसर्ग प्राप्त हुआ। ऋग्वेद में "औषधि सूक्त" के समस्त 23 मन्त्रों में वनस्पतियों के महत्व का वर्णन किया गया। संसार के आदिम ग्रन्थ ऋग्वेद के औषधि सूक्त में वनस्पतियों के सन्दर्भ में लिखा है – "देवों में भी तीन युगों के पूर्व ही वनस्पतियों की उत्पत्ति हो चुकी थी।"

या ओषधिः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामहं षतं धाममनि सप्त च।।[1]

वनस्पतियों के उत्पत्ति स्थानों की व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि ये संसार में सैकड़ों एवं हजारों स्थानों पर उत्पन्न होती हैं। जीवन को सुखमय बनाने के लिए वनस्पतियों का दैनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोग किया जाता है। यथा – भोजन, वस्त्र, गृह निर्माण, सौन्दर्य प्रसाधन, औषधि इत्यादि।

तत्कालीन मनुष्यों ने जीव–जन्तुओं को रोग ग्रस्त होने पर भिन्न – भिन्न प्रकार की वनस्पतियों का भिन्न – भिन्न प्रकार से प्रयोग करते हुए देखा तथा उनसे सीख लेते हुए मनुष्य भी वनस्पतियों का उपयोग विभिन्न प्रकार की व्याधियों की चिकित्सा तथा स्वस्थ रहने हेतु करने लगा।

औषधियों को परिभाषित करते हुए ऋग्वेद में कहा गया है कि "औषधियॉ विविध दोंषो को दूर करने वाली होती है तथा इन्हे संग्रह करके तथा चिकित्सा के लिए प्रयोग करने वाला वैद्य कहलाता है।"

मा वो रिषत्खनिता यस्मै चाहं खनामि वः।
द्विपच्चतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनातुरं।।[2]

वेदों एवं आयुर्वेदिक ग्रन्थों के अतिरिक्त संस्कृत साहित्य के विद्वानों के द्वारा भी अनेक ग्रन्थों में अनेकानेक जगहो पर अनेकानेक वानस्पतिक औषधियों के नाम, स्वरुप, गुणकर्मों आदि का उल्लेख किया गया है जिनका विषद् अध्ययन वर्तमान समय में समाज की आवश्यकता है। अतः उक्त क्रम में इस शोध प्रपत्र के माध्यम से यहॉ बाणभट्ट कृत कादम्बरी में वर्णित आयुर्वेदीय वनस्पतियों का एक परिचय लिखने का प्रयास किया गया है।

वानस्पतिक औषधि का एक परिचय–

वनस्पतियों का इतिहास भी उतना ही पुराना है जितना कि मानव का। प्रारम्भ से ही वनस्पतियों का मानव से अटूट सम्बन्ध रहा है क्योंकि मानव समाज के सभी क्षेत्रों में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः यदि यहा कहा जाय की वनस्पतियां एवं समाज एक दूसरे के लिए दर्पणभूत है तो यह अतिश्योक्ति नही होगी। अतीत के सुदीर्घ कालक्रम से आज बहुषः सन्दर्भित वनस्पतियों एवं उनके अभिधानों का व्यक्तिपरक विनिष्चय भी दुरुह विवादास्पद एवं गम्भीर चर्चा का विषय बना है। मानव जीवन को स्वस्थ रखने हेतु चिकित्सा पद्धतियों का विकास हुआ है। प्राचीन चिकित्सा पद्धति का नाम आयुर्वेद है। आयुर्वेद अर्थात आयु का शास्त्र (जीवन का विज्ञान)। इसकी वैज्ञनिकता वनस्पतियों अथवा औषधियों के सर्वांगीण अध्ययन एवं विकास पर निर्भर है। आयुर्वेद के प्राचीन महर्षियों ने ऐसे निर्दुष्ट द्रव्यों का अन्वेषण किया था जो आतुर के व्याधि लक्षणों

**शोध छात्रा, **शोध छात्र, ***एसोसिएट प्रोफेसर, द्रव्यगुण विभाग, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, बी.एच.यू., वाराणसी*

को दूर करने के साथ ही साथ आरोग्य वर्धक भी होता था; क्योंकि आयुर्वेद का उद्देश्य है–

प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणमातुरस्य विकार प्रषमनं च ।।26।।[3]

स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा तथा आतुर के विकार का प्रशमन। आयुर्वेदिक चिकित्सा का यह सिद्धान्त है कि रोगों के कारण एवं लक्षण का प्रशमन हो और पुनः रोग की उत्पत्ति न हो। औषधि शब्द की उत्पत्ति करते हुए सायण ने लिखा है कि– "ओषः पाकः आसु धीयते इति औषधयः।"[4] यास्क के अनुसार "ओषधयः ओषद् धयन्तीती वा। ओषत्येना धयन्तीती वा। दोषं धयन्तीती वा।"[5]

विभिन्न वैदिक ग्रन्थों महाकाव्यो में वनस्पतियों का वर्णन है जिसमें कि ऋग्वेद में 67, यजुर्वेद में 82, अथर्ववेद में 288 तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में 129, उपनिषदों में 31 व कल्पसूत्रों में 519, पाणिनि अष्टाध्यायी एवं वार्तिक में 152 + 31, पातंजल महाभाष्य में 109 और यास्क निरुक्त में 26 औषधिय वनस्पतियों का उल्लेख प्राप्त होता है।[6]

साहित्य में वनस्पतियॉ–

समाज के सभी क्षेत्रों में वनस्पतियों का उतना ही महत्व आज भी है जितना की अतीत में था। कवियों एवं लेखकों ने भी बहुताः दुरुह तथ्यों को समझने – समझाने के लिए वनस्पतियों की नैसर्गिक स्वरुप रचनात्मक भावात्मक विशेषताओं का अवलम्बन किया है, अतः अतीत के अध्ययन में तत्कालीन साहित्य में वनस्पतियों का अध्ययन अपना विशिष्ट स्थान रखता है। निकटवर्ती विगत वर्षो में ऐसे अध्ययनों से महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आये जिससे शोध ाकर्ताओं को भी प्राचीन भारतीय साहित्य में जैसे रामायण, महाभारत, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मेघदूतम् आदि साहित्य में वनस्पतियों के अध्ययन की दिशा में प्रेरणा स्त्रोत रही।

बाणभट्ट एवं कादम्बरी–

महाकवि बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के वे दैदीप्यमान नक्षत्र है जिनकी समता करने वाला कोई गद्यकार न हुआ है न होने की सम्भावना है। सारस्वत कुल का यह महनीय व्यक्ति साक्षात् सरस्वती का अवतार प्रतीत होता है। सन्तोष है कि बाणभट्ट ने अपने जीवनवृत्त का पर्याप्त उल्लेख कर दिया है। महाकवि बाणभट्ट ने स्वरचित हर्षचरित में आत्मवृत्त का परिचय दिया है। उसमें स्पष्ट है कि महाकवि बाणभट्ट तत्कालीन सम्राट हर्षवर्धन के सभा पण्डित थे। हर्षचरित का समय 606–647 ई0 निश्चित है। अतएव उनका समय सातवी शताब्दी निश्चित होता है। महाकवि बाणभट्ट का वंश वेद, वेदान्त, कर्मकाण्ड के निरन्तर प्रचार प्रसार के लिए प्रसिद्ध रहा है। इनकी माता का देहान्त बचपन में ही हो गया था पिता के स्नेह के छॉह में इनका पालन पोषण हुआ। किन्तु 14 वर्ष की आयु में पिता का देहावसान हो जाने से ये काफी शोकाकुल हो गये। अपार दुःख को भुलाकर देशो प्रदेंशो का भ्रमण किया। इनकी मण्डली में अनेक कलाओं में पारंगत कवि, कथा वादक, मूर्तिकार, जादूगर, चित्रकार, सन्यासी आदि थे।

महाकवि बाणभट्ट की प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हर्षचरित एवं कादम्बरी दो ही मानी जाती है। कादम्बरी को कथा तथा हर्षचरित को आख्यायिका स्वीकार किया गया है।[7] हर्षचरित के समापन के पश्चात् बाणभट्ट ने सामान्य साहित्य चर्चा में जीवन व्यतीत किया तथा बृहत्कथा के कथानक के आधार पर कादम्बरी जैसी उदात्त गद्य शैली, ओजपूर्ण समास बहुलः मनोहर प्रवाहयुक्त, नदी, वन, पर्वत, तपोवन, राजप्रसाद नगर आदि के प्राकृतिक एवं कृत्रिम सौन्दर्य के वर्णन तथा ऋषि, मुनि, ब्रह्मचारी, राजा आदि विविध चरित्रों से चित्रित अनेक आयामो वाली सुन्दर कृति में संस्कृत साहित्य को अमुल्य मणि प्रदान की है।

कादम्बरी का कथानक काल्पनिक अर्थात् कवि कल्पना पर आधारित है। इस कथा का मूल स्त्रोत

गुणाढ्य कृत बृहत्कथा है, जो इस समय अनुपलब्ध है। क्षेमेन्द्र कृत बृहत्कथा मंजरी और सोमदेव कृत कथासरित्सागर में उपलब्ध राजा सुमना की कथा को बाणभट्ट ने अपने वैदुष्य एवं कल्पना के आधार पर कुछ परिवर्तन कर कादम्बरी कथा को सुन्दर एवं रोचक रूप प्रदान किया, जो इस समय तक सहृदय काव्य रसिकों को काव्य–रसास्वादन द्वारा अलौकिक आनन्द का अनुभव देने में समर्थ है।

कादम्बरी में आयुर्वेदिक वनस्पतियॉ–

वनस्पतियॉ जीव जगत का एक प्रधान अंग है। बाणभट्ट कृत कादम्बरी में भी विभिन्न प्रकार से वनस्पतियों का संकलन है, जिसमें मुख्यतः वनस्पतियों की श्रृंखला में अक्ष, अगस्ति, अगरू, अम्बुरुह, अम्भोजनी, कमलीनी, रक्तारविन्द, अरविन्दीनी, अर्क, अरिष्टतरु, अलाबु, अशोक, असन, आमलक, आशाढध, पलाश, इंगुदी, इन्दीवर, एला, कदम्ब, कदली, उत्पल, कन्दालीनी, कमल, करंज, कर्पूर, कलम, कल्पतरु, कल्हार, कार्पास, काश, किंशुक, कीचक, कुंकुम, कुटज, कुन्द, कुब्जक, कुमुद, कुष, केतक – केतकी, खर्जुर, गवेधुकु, गुग्गुल, गुंजा, ग्रन्थिपर्ण, चन्दन, चम्पक, चूत, जम्बू, तमाल, ताम्बूल, तामरस, ताल, तिल, दाडिम, दूर्वा, द्राक्षा, धान्यप्रियंगु, धाराकदम्ब, नीम, नल, पारिजात, पिप्पली, पाषाण भेद, पुण्डरीक, पुन्नाग, पुष्कर, मदन, मदनफल, मन्दार, प्रियंगु, बिम्ब, बिल्व, बकुल, मुंज, मृणाल, यव, रक्तचन्दन, लकुच, लवली, लोध्र, वीरतरु, वेणु, शाल, शिरीष, सप्तपर्ण, श्यामक, शर, शमी, शतपत्र, ब्रीही, शाल्मली, सोम, हरिचन्दन, हरिद्रा आदि द्रव्यों का वर्णन है।

विमर्श–

वनस्पतियों का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव का। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से मानव के नित्य, नैमित्तिक एवं आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा स्वास्थ्य तथा अन्य सन्दर्भो में वनस्पतियों से अटूट सम्बन्ध रहा है। मानव ने भी तज्जन्य कृतज्ञता प्रकाश की अपनी प्रतिक्रिया का प्रदर्शन नाना प्रकार जैसे पूजन या साहित्य के माध्यम से सम्मानित किया है। प्राचीन कृतियों में श्रेष्ठ कृति बाणभट्ट कृत कादम्बरी जो कि साहित्य जगत कि अविस्मरणीय रचना है। हमने पाया कि स्वास्थ्य के प्रति लाभकर औषधियों का संकलन इस रचना में विभिन्न स्थानों पर किया गया। बाणभट्ट ने तो वनस्पतियों का प्रयोग विभिन्न प्रसंगो के रूप में किया पर आयुर्वेद की दृष्टि से विवेचना करने पर इनका महत्व और भी बढ़ जाता है। इस क्षेत्र में कार्य की आवष्यकता है।

सन्दर्भ सूची

1– ऋग्वेद–10/97/1, श्री मत्सायणाचार्यविरचित– माधवीयवेदार्थप्रकाशसंहिता, सम्पादक – श्रीमन्मोक्षमूलरभट्टः, चौखम्भा कृष्णादास अकादमी, वाराणसी – 2006

2– ऋग्वेद–10/97/20, श्री मत्सायणाचार्यविरचित – माधवीयवेदार्थप्रकाशसंहिता, सम्पादक – श्रीमन्मोक्षमूलरभट्टः, चौखम्भा कृष्णादास अकादमी, वाराणसी – 2006

3– च0 सू0 30/26, भाग–1, पृष्ठ संख्या–587, श्रीमदग्निवेश प्रणीत चरकदृढबल प्रतिसंस्कृत, चरकसंहिता ''विद्योतिनी'' हिन्दी व्याख्या कृत पं0 काशीनाथ पाण्डेय एवं डॉ0 गोरखनाथ चतुर्वेदी, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी–2011

4– अथर्ववेद 6/95/03, अथर्ववेद संहिता – डा0 रामकृष्णशास्त्री, चौखम्भा औरियन्टालिया, वाराणसी।

5– निरुक्त 9/27,निरूक्तम्–व्याख्याकार छज्जूरामशास्त्री एवं मेहरचन्द लक्ष्मणदास, पब्लिकेशन अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली।

6– द्रव्यगुण विज्ञान, भाग–4, पृष्ठ संख्या 200–216 वैदिक औद्भिद द्रव्य एवं द्रव्यगुण का इतिहास, आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी –2003

7– कथाकल्पिता वृत्तान्त सत्याख्यायिका मता। अमरकोश, श्रीमद्मरसिंह प्रणीत, भाषा टीका श्रीमन्नालाल अभिमन्यु, चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी – 2008

अथर्ववेद एवं आयुर्वेद के सम्बन्धों की विवेचना

- श्याम सुन्दर*, ज्योति शुक्ला**, भुवाल राम***
e-mail : shyambhu1989@gmail.com

प्रस्तावना.–

मानव की उत्पत्ति के समय सभ्यता और असभ्यता नाम की कोई वस्तु विद्यमान नहीं थीं। उस समय मनुष्य का मन विकसित नहीं हुआ था तथा वह जैसे तैसे अपना पालन पोषण कर रहा था। धीरे–धीरे उसने गुफाओं में रहना सीख लिया, उसके बाद वस्त्रों को पहनना सीख लिया, और रोगों से निदान पाने के लिये औषधियों की जानकारी भी प्राप्त कर ली। मानव के उपयोग की सारी सामग्री प्रकृति में पहले से ही उपलब्ध थी। जैसे–जैसे मानव जाति अपने मस्तिष्क का उपयोग करती गयी, उसी क्रम से उसकी आवश्यकतायें आविष्कारों की जननी बनती गयी। हर काल में मनुष्य रोगों से बचने के लिये औषधियों का उपयोग करता रहा है। द्रव्य रूप में हमारा आहार एवं औषध भी आ जाता है। अतः पहले प्रकृति में मानव जाति कम थी। पेड़ पौधे बहुत अधिक थे। अतः ऑक्सीजन का प्रभाव अधिक रहता था। जिसके कारण मनुष्य में रोग कम पाये जाते थे। आज के मानव जाति ने प्रकृति का इतना उपभोग कर लिया है, जिसके कारण पृथ्वी का सन्तुलन बिगड़ गया है। अब आवश्यकता आ पड़ी है कि प्रकृति आधारित जीवन की तरफ पुनः उन्मुख हो जायें।

भारतीय परम्परा के अनुसार जीवन का प्रत्येक क्षेत्र किसी न किसी रूप में वैदिक वाङ्मय से सम्बन्धित है। वैदिक वाङ्मय वट वृक्ष के समान विशाल है, जिसमें समस्त ज्ञान–विज्ञान समाहित है। जीवन के प्रत्येक विषय का मूल स्रोत ढूढ़ने के लिये हमें वेदों के ही शरण में जाना पड़ता है।

इस अगाध ज्ञानराशी में से कुछ न कुछ नवीन वस्तु को प्राप्त करने के इच्छुक सभी लोग आज भी प्रयासरत देखें जाते हैं। चिकित्साशास्त्र का उपजीव्य मुख्यतः अथर्ववेद

ही है। अतः अथर्ववेद ''भैषज्यवेद'' भी कहा जाता है। विशेष रूप से आयुर्वेद का सम्बन्ध अथर्ववेद से ही स्थापित किया गया है, क्योंकि इस वेद में रोगों के चिकित्सा का अन्य संहिताओं की अपेक्षा विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। सुश्रुत का कथन है कि आयुर्वेद, अथर्ववेद का 'उपाङ्ग' है। मूलतः इसमें एक हजार अध्यायों में एक लाख श्लोक थे और समस्त प्राणियों के सृष्टि से पहले इसे ब्रह्मा ने रचा था। [1]

इह खलु आयुर्वेदमुपाङ्गथर्ववेदस्यनुत्पाद्यैव प्रजाः।
श्लोकशतसहस्रमध्यायसहस्रं च कृतवान् स्वयंभूः।।

(सुश्रुत सं0 सू0 1/6)

चरक संहिता में यह कहा गया है कि एक चिकित्सक के लिये अथर्ववेद में विशेष रूप से भक्ति होनी चाहिये, क्योंकि अथर्ववेद में बलि, मंगल, होम, नियम, प्रायश्चित उपवास तथा मन्त्रों द्वारा चिकित्सा का निरूपण किया गया है।[2]

चतुर्णाभष्क्सामयजुरथर्ववेदानामात्मनो अथर्ववेदे
भवितरादेश्या वेदोह्याथर्वणोदानस्वस्त्ययन,
बालमङ्गल होम नियमप्रायश्चितोपवासमन्त्रादि
परिग्रहाच्चिकित्सां प्राह ।।

(चरक सू0 30/21)

अथर्ववेद से आयुर्वेद के सम्बन्ध का स्वरूप इस तथ्य में भी निहित है कि इन दोनों में रोगों के उपचार और दीर्घायु की प्राप्ति का वर्णन है। अथर्ववेद में

**शोध छात्र, **शोध छात्रा, ***एसोसिएट प्रोफेसर, द्रव्यगुण विभाग, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, बी.एच.यू., वाराणसी*

मुख्यतः तन्त्र–मन्त्र द्वारा तथा आयुर्वेद में औषधि द्वारा। अथर्ववेद तथा आयुर्वेद दोनों में रोगों के उपचार का उल्लेख है, और इसी ने जनमानस में इन दोनों को सामान्यतः परस्पर सम्बन्ध कर दिया।

विषयवस्तु –

औषधियाँ ही मानव जीवन के लिये अमृत है, इसलिये तथागत बुध्द को ''भैषजाकार'' कहा गया है। जैसे रोग, रोग का कारण, रोग का निवारण एवं रोग निवारण की दवा । ये चार कारण ही बौद्ध दर्शन का आधार बना। यही जीवन को शुध्द उन्नतिशील बनाने के लिये एवं स्वस्थ जीवन जीने के लिये औषधियों को अपने उपयोग में लाने की भारतीय एवं पाश्चात्य सभी दार्शनिकों ने भी अपने अपने समय पर औषधियों के महत्व को बतलाया । कौशिक सूत्र की टीका करते हुए दारिलभट्ट हमें यह संकेत देते हैं कि आयुर्वेद तथा अथर्ववेद में सम्पर्क स्थापित करने वाली कौन कौन सी बातें हो सकती हैं। अतः वे कहते हैं कि व्याधियाँ दो प्रकार की होती हैं, एक तो वे जो कुपथ्य से होती हैं और दूसरी वे पाप एवं अभिशाप–जन्य होती हैं। आयुर्वेद की रचना प्रथम प्रकार की व्याधियों के उपचार के लिये हुई और आथर्वण क्रियाओं की रचना दूसरे प्रकार की व्याधियों के लिए हुई ।[3]

''द्विप्रकारा व्याधयः।
आहारनिमित्ता अशुभनिमित्ताश्चेति।
तत्राहारसमुत्थानां वैषम्य आयुर्वेद चकार,
अधर्मसमुत्थनां शास्त्रं विदमुच्यते।।

(कौशिक सूत्र 25/2)

अथर्ववेद में एक मन्त्र है जिससे यह ज्ञात होता है कि उस काल में सैकड़ों चिकित्सक थे और औषधियों से व्याधियों का उपचार करने हेतु एक सुसम्पन्न भैषज संहिता विद्यमान थी। इस मन्त्र में मणियों के गुणों का स्तवन किया गया है और कहा गया है कि उनकी शक्ति सहस्रों चिकित्सकों द्वारा प्रयुक्त सहस्रों औषधियों के बराबर होती है।[4]

शतहयस्य भिषजः सहस्रमुत वीरूधः।

(अथर्व0 2/9/3)

अतः इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है कि अथर्ववेद काल में भी औषधियों का प्रचलन जोर शोर से था। अथर्ववेद या ब्रह्मवेद के नाम से विख्यात चतुर्थवेद मुख्यतः जादू टोनों का ही निरूपण करता है।

ऐसा मानने कोई कारण नहीं है कि इस वेद की रचना प्राचीनतम ऋग्वैदिक ऋचाओं के भी बाद हुई क्योंकि स्वभावतः भारत के इतिहास में कभी ऐसा समय नहीं आया, जब लोगों ने व्याधियों उपचार करने या विपत्तियों को दूर करने और शत्रुओं को क्लेश पहुँचाने के लिये जादू टोने का आश्रय नहीं लिया है। स्वयं ऋग्वेद को भी अधिकांश में ऐसी अभिचारिक प्रक्रियाओं का एक विशिष्ट विकसित रूप माना जा सकता है। मनुष्यों के मस्तिष्क पर आथर्वण जादुओं का आधिपत्य सम्भवतः अत्यन्त शक्तिशाली था। क्योंकि वे उन्हें अपने सारे दैनिक कृत्यों में प्रयोग करते थे आज भी जब ऋग्वेदीय यज्ञ अत्यन्त विरल हो गये हैं, अथर्वण जादू टोनों और उनसे प्रादुर्भूत अपेक्षाकृत परवर्ती काल के तान्त्रिक जादू टोने का प्रयोग हिन्दुओं के समस्त वर्गों में बहुत सामान्य है। पुजारी वर्ग के आय का एक बहुत बड़ा भाग पुरानी एवं गम्भीर बीमारियों के इलाज करने, कष्ट निवारण करने, परिवार में पुत्र प्राप्त करने इत्यादि के लिये किये गये स्वस्त्ययनों, प्रायश्चितों और होम से प्राप्त होता है। रक्षा कवच का प्रयोग भी लगभग उतने ही मुक्त रूप से हो रहा है, जितना की तीन या चार हजार वर्ष पहले होता था और साँप के मन्त्र तथा कुत्ते आदि काटने के मन्त्र आज भी ऐसी बातें हैं, जिनका विरोध करना चिकित्सकों के लिए कठिन है। जादू–टोने के अदृश्य शक्तियों में विश्वास सामान्य हिन्दू गृहस्थ में प्रायः धर्म का स्थान लेता है । अतः यह मान लिया जा सकता है कि जब अधिकांश ऋग्वेदीय ऋचाओं की रचना भी नहीं हुई

थी, उस समय अथर्वण मन्त्रों की संख्या प्रचलित थी। शास्त्राघात जनित घावों से रूधिर प्रवाह रोकना, अपस्मारजन्य मूर्च्छा को और भूत पिशाच, ब्रह्मराक्षस इत्यादि दुष्टात्माओं के वशीभूत होने से रोकना ,वात ,पित्त, कफ हद्रोग, पाण्डुरोग, श्वेतकुष्ठ इत्यादि रोगों की चिकित्सा करना, ब्राह्मण के शाप से दुष्प्रभावों का निवारण, पुत्र प्राप्ति, सुख प्रसूति और दीर्घायु की प्राप्ति, यक्ष राक्षसादि के आविर्भाव आदि विपदाओं से रक्षा करना इत्यादि के वर्णन प्राप्त होते हैं।[5]

चारण वैद्य शाखा की विद्यमानता हमें उस विशिष्ट शाखा को प्रदर्शित करती है, जिससे उस जात्रेक चारण शाखा का प्राचीन ''अथर्ववेद'' निर्मित था। जिसने अथर्ववेद की आयुर्वेद से एकात्मकता स्थापित की थी । इस प्रकार अनेकानेक ज्ञान–विज्ञान का भण्डार वेद का विषय यज्ञ सम्बन्धी है, उसमें प्रसंगवश अवान्तर रूप में आया हुआ ''आयुर्वेद'' को कुछ लोग उपवेद भी कहते हैं। अवयव–अवयवी भाव के कारण कुछ लोग इसे ''वेदाङ्ग'' की संज्ञा देते हैं तथा स्वल्प अवयव के दृष्टिकोण से कुछ लोग इसे ''वेदापाङ्ग'' भी कहते हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद इन तीनों वेदों में आयुर्वेद के कुछ ही अंश उपलब्ध है, परन्तु कर्मकाण्ड के विशेष विकसित हो जाने पर शान्तिक, पौष्टिक आदि ऐहिक कल्याण कारक, कर्म एवं दैहिक आगन्तुक कर्म प्रधान अथर्ववेद की पृथक् गणना करके वैदिक विज्ञान चार विभागों में विभक्त कर दिया गया। तत्पश्चात् अथर्ववेद में भैषज्य कर्म निहित है।[6]

न तं यक्ष्मा अरून्धते नैनम शपथी अश्नुते,
यं भेषजन्य गुल्गुलः सुरर्भिगन्धी अश्नुते।
विष्पस्चस्तस्माद् यक्ष्मामषा अश्वाइवरेते,
यद् गुल्गुल सन्धवं वद वाप्यसि समुमद्रियम्।

(अथर्व0 19/38/1–2)

तथा भूतादि परिहार कर्म विशेष रूप से पृथक् कर दिये गये।[7]

वर्च आ धेहि मे तन्त्रा सह ओजो वयी बलम्।
इन्द्रियाय त्वां कर्म वीर्याय प्रतिगृहामि शतशारदाय ।।

(अथर्व0 19/37/2)

निष्कर्ष–

इस प्रकार अथर्ववेद में विशेष रूप से आये हुए शान्तिक पौष्टिक आदि क्रियाओं से युक्त भैषज्य विज्ञान के क्रमिक विकास के साथ–साथ आयुर्वेद विषयों के भी विकसित होने के कारण तथा अन्य वेदों की अपेक्षा अथर्ववेद में विशेष रूप से आयुर्वेद के विषय दृष्टिगोचर होने से अथर्ववेद के साथ इसका घनिष्ठ सम्बन्ध स्पस्टतः परिलक्षित होता है।

सन्दर्भ सूची–

1– सुश्रुत संहिता–श्री डल्हणाचार्य विरचित टीका, भूमिका– आचार्य–प्रियव्रत शर्मा,चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी।

2– सुश्रुत सहिता–चक्रपाणिदत्त विरचित आयुर्वेद दीपिका व्याख्या, मुन्शी मनोहरलाल पब्लिशर्स,दिल्ली।

3– कौशिक सू0–सम्पादक–मैरिस ब्लूमफील्ड,मोतीलाल बनारसीदास वाराण्सी।

4– अथर्व0 पं0 श्री पाद दामोदर सातवलेकर, प्रकाशक– स्वाध्यायमण्डल, किल्ला पारडी जिला बलसाड, गुजरात।

5– अथर्व0 संहिता चिकित्सा विज्ञान, सम्पादक– डां हीरालाल विश्वकर्मा, पृष्ठ 11,12

6– अथर्व0 संहिता सम्पादक– डॉ रामकृष्णशास्त्री, चौखम्भा औरियन्टालिया, वाराणसी।

7– अथर्व0 संहिता सम्पादक–डॉ रामकृष्णशास्त्री, चौखम्भा औरियन्टालिया वाराणसी।

EFFICACY OF HERBAL COMPOUND IN GRAYING OF HAIR: A CASE REPORT

- Hetal Amin*, Satej Banne**, Rohit Sharma***
e-mail : satejbanne16@gmail.com

ABSTRACT :

According to W.H.O. the incidence is high in age group of 20-30 yrs for graying of hairs. The present study is intended to fill gap where an effective safe way of treating Akala Palitya is to be made available. It is concluded that the Palitya is a condition for which modern medicine has no treatment; the holistic approach of Ayurvedic system of medicine provided relief to the patient.

Keywords: Palitya, Ayurveda, Pitta, Marma

INTRODUCTION:

Akala Palitya is common burning problem particularly in youth resulting in cosmetic, mental and social issue. In tropical and developed countries, Akala Palita is increasing. According to W.H.O. the incidence is high in age group of 20-30 yrs.[1] Loss of hair color is due to a gradual decline in the production of a pigment- melanin the Bhrajaka Pitta in Ayurveda terminology, in the hair bulb.[2] White hair has no pigment, and gray hair has some but not as much as a red, black or brown hair. Not all hairs respond in the same way or at the same time. So the graying process usually is gradual. The first gray hair usually appears near the temples the region of Shankha Marma. Then the grayness spreads to the crown, and later to the back of the head.

The present study is intended to fill gap where an effective safe way of treating Akala Palitya is to be made available. According to Acharya, Nasa is entrance of Shira (head) and Acharya Vagbhatta while mentioning the treatment of Palitya told Nasya as first line of treatment.[3]

We describe a patient with Palitya, who was regularly taking medicines and seeking consultation for a period of 1 year, which included orally some Allopathic medicine and topically, artificial supplements (name and record of the inhaled medicine not available with the patient). However, even after that patient had slight symptomatic relief and turned to Ayurvedic medicines for relief.

OBJECTIVES:

Evolution of efficacy of Anutaila Nasya and oral herbal medicine in the management of Akalapalitya.

CASE REPORT:

A 22 year old girl, Hindu by religion, unmarried, lives presently in Jamnagar. She is complained of Graying hairs for the past 1 year. Patient complains started when she was 21 years old after she suffered from Typhoid in February 2014 for which she took treatment; following which she had Palitya.

On April 2014, she started allopathic medicine for Palitya but no result was found, even though she continued using medicine for 4 month, as doctor advised her to use that till her problem

*Assistant Professor, Department of Basic Principles, **Assistant Professor, Department of Dravyaguna, Faculty of Ayurveda, Parul University, Baroda, Gujarat. ***Assistant Professor, Department of RSBK, Abhilashi Ayurved institute and Research Centre, Abhilashi University, Mandi, Himachal Pradesh

persisted. After 4 months along with her digestive problem, her hair problems i.e. Palitya and Khalitya complain was not cured by allopathic medicines. Therefore, she came to Ayurveda treatment.

SAMPRAPTI:

Acharya Sushruta and Madhavakara have emphasized pathogenesis with the increase of Vayu especially due to excess of Shoka and Shrama. At the same time the Pitta is being increased in its Ushna Guna. This provoked Pitta circulates throughout the body through Rasayanis by the virtue of Vikshepana Guna of provoked Vata to increase the Sharira Ushma.[4] This Shariika Ushma reaches to Shira and vitiates Sthanika Vata Karya and Shleshma Karya.

TREATMENT:

All oral and local modern medicines were stopped. Considering this condition as Palitya wherein vitiation of Vata and Pitta Dosha is described, she was treated with following medicines.

Anu taila: Pratimarsha Nasya (2 drops) twice daily [5, 6]

Rasayana Choorna: 3 gm [7]

Avipattikara Choorna: 3 gm twice a day before at least half an hour of meal

Saptamrita Lauha: 1 gm with unequal amount of Honey and Ghrita at empty stomach

Triphala Yavakuta: for hair wash every alternate day

Along with the above medicines, she was advised simple lifestyle modifications. For example, drinking 8-10 glasses of water each day to keep the body hydrated and flushes out impurities.

The patient took this treatment for 2 week, with marked relief in symptoms of Khalitya and indigestion. She was advised to continue the same treatment for at least 4 months. After 2 months, patient had marked improvement in Palitya and Khalitya. In October 2014, Anu taila Pratimarsha Nasya was replaced by Ksheer Bala taila. Patient relieves from complaints with both subjective and objective relief. These entire medicine better combated Vata-Pitta pathology of present patient.

DISCUSSION:

In the present case drug induced auto immune reaction was responsible for Palitya and Khalitya. Thus, taking a holistic view point in the understanding of the disease and planning the treatment protocol accordingly; has proved much effective than the prevailing management modalities. Hence, systemic and holistic approach to treat the disease palitya and managing this humeral imbalance, along with local/topical therapeutically procedures, the condition could be managed well.

Vata-Pittahara oral, local, Nasya (Snehana) therapy was initiated with the prescribed medicine. But Vata was managed first with Anutaila Nasya. A close watch on Jatharagni (digestion) was kept and corrected as well. With this treatment, Palitya and Khalitya problem was relieved and then Avipattikara churna was added for regularizing Pitta.

CONCLUSION:

Thus, it is concluded that the Palitya is a condition for which the holistic approach of Ayurvedic system of medicine provided relief to the patient.

REFERENCES:

1. Available from http://www.who.int/nmh/publications/ncd_report_chapter1.pdf. (Accessed on 19-5-16).
2. Available from http://ayurvedahimachal.blogspot.in/2012/05/palitya-pre-mature-greying-of-hair.html?view=sidebar. (Accessed on 19-5-16).
3. Ashtang Hriday Uttartantra 24/33.
4. Madhav Nidan 55/32-Madhukosha Tika, Vol. 2 p.n.271.
5. Charaka Samhita Sutrasthan with Chakrapani commentary- 5.
6. Sushruta Samhita Uttaratantra with Nibandha Samgraha commentary by Dalhana Acharya: Acharya Yadavaji Trikamaji-9/21-22. Varanasi: Chaukhambha Surbharti;2008.
7. Ashtanga Hridaya Uttaratantra with Arunadatta commentary Pandit. Hari sadashiva shastri-39/159. Varanasi: Chaukhambha Surbharti;2002.

पेज नं0 10 का शेष

15. Parashar Radhakrishna, Sharangadhara SaChita with 'Krishna' Hindi Commentary, Shri Baidyanath Ayurved Bhavan Pvt. Ltd., 4th edition 1994.
16. Ranade Subhash, Kayachikitsa, Chaukhamba Sanskrit Pratishthan, Varanasi, 2001.
17. Sharma .R.K.; Dash Bhagwan, Caraka SaChita with English Translation, vol 1 (Sutrasthana), 2 (Nidanasthana, Vimanasthana, Sharirasthana, Indriyasthana), 3 (Cikitsasthana 1 to 15) & 4 (Cikitsasthana 16 to 30, Kalpasthana & Siddhisthana), Chaukhamba Sanskrit Series Office, Varanasi, Reprint 2010.
18. Svoboda.Robert.E, Your Ayurvedic Constitution, Motilal Banarsidas Publishers Private Limited, New Delhi, 1st Edition, 1994.
19. Tripathi Bramhananda, Sharangadhara Samhita with Anjananidana of Maharshi Agnivesha and Dipika Hindi commentary, Chaukhamba Surbharati Prakashan, 2nd edition,2001.

शोक समाचार

प्रो0 अरुण कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्रधानाचार्य, राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, अतर्रा, बाँदा, उत्तर प्रदेश का असामयिक निधन 30 जुलाई 2016 को हो गया। उनके निधन से आयुर्वेद जगत को अपूरणीय क्षति पहुंची है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं उनके परिवार जनों को इस दुःख की घड़ी को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। विश्व आयुर्वेद परिषद् परिवार उन्हें अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्रो0 जैमिनी पाण्डेय, पूर्व विभागाध्यक्ष, मौलिक सिद्धांत विभाग, आयुर्वेद महाविद्यालय, अतर्रा, हंडिया, उत्तर प्रदेश का स्वर्गवास दिनांक 31 जुलाई 2016 को काशी में हो गया। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविदयालय, महाराष्ट्र तथा अन्य जगहों पर अपने ज्ञान का दीपक जलाया। एक सप्ताह पूर्व तक उन्होंने अध्ययन, अध्यापन तथा चिकित्सा का कार्य किया। प्रो पाण्डेय अपने विषय के उच्च कोटि के विद्वान थे। उनके निधन से आयुर्वेद जगत मर्माहत है। विश्व आयुर्वेद परिषद् परिवार इन महानुभाव के निधन पर शोक संवेदना प्रकट करता है।

WATER POLLUTION AND IT'S MODERN &AYURVEDIC MANAGEMENT

- Nitin Urmaliya*, Amit Sinha**, Prakash Urmaliya***

e-mail : dr.nitinurmaliya@gmail.com

ABSTRACT :

Water pollution is the contamination of water bodies (e.g. lakes, rivers, oceans, aquifers and groundwater). This form of environmental degradation occurs when pollutants are directly or indirectly discharged into water bodies without adequate treatment to remove harmful compounds. Actually water pollution occurs when a body of water is adversely affected due to the addition of large amounts of materials to the water. The sources of water pollution are categorized as being a point source or a non-source point of pollution. Point sources of pollution occur when the polluting substance is emitted directly into the waterway. A pipe spewing toxic chemicals directly into a river is an example. A non-point source occurs when there is runoff of pollutants into a waterway, for instance when fertilizer from a field is carried into a stream by surface runoff.

Water pollution may be analyzed through several broad categories of methods such as : physical, chemical and biological. Most involve collection of samples, followed by specialized analytical tests. Some methods may be conducted in situ without sampling, such as temperature. Government agencies and research organizations have published standardized, validated analytical test methods to facilitate the comparability of results from disparate testing events.water pollution is a very big problem now-a-days because it dimnish the health.

INTRODUCTION:

Hydrosphere- more than 75% of earth's surface

Pollution– is derived from latin word pollutioneum – to defete or make dirty. Water pollution occurs when a body of water is adversely affected due to the addition of large amounts of materials to the water. The sources of water pollution are categorized as being a point source or a non-source point of pollution. Point sources of pollution occur when the polluting substance is emitted directly into the waterway. A pipe spewing toxic chemicals directly into a river is an example. A non-point source occurs when there is runoff of pollutants into a waterway, for instance when fertilizer from a field is carried into a stream by surface runoff.

WHO Standards for Potable water:

Qualities	Value
Color	Transparent
Taste and odour	Acceptable
Turbidity	<5 NTU
pH	6.5 - 8.5
BOD	0.75-1.5mg/L
Chloride	400 mg/L
Total hardness	500 mg/L as CaCO3
Total dissolved solids	1000 mg/L
Faecal coli forms	0 per 100 m

Types of water pollution:

Physical water pollution

Chemical water pollution

Biological water pollution

Physiological water pollution

1.Physical pollution:

Changes in water with regard to its colour, odour, taste, density, turbidity, thermal properties.

2. Chemical pollution:

Lecturer,Dept.of Agadatantra,Lecturer,Dept.of Rasashastra,Govt.Ashtang Ayurveda College,Indore***P.G.Scholar,Dept.of Rog evum Vikruti vigyan,Shubhdeep Ayurvedic college, Indore, M.P.*

Due to presence of inorganic & organic chemicals such as acids,alkalies,toxic inorganic compounds & dissolved organic compounds in water.

3. Physiological pollution:

Caused by several chemical agents such as free chlorine, sulphur dioxide, hydrogen sulphide, ketones, phenols, amines etc.

Limits of these are 0.002 ppm

4. Biological pollution:

Due to presence of pathogenic bacteria, certain fungi, pathogenic protozoa, viruses,parasitic worms, etc.

Other Types of water pollution:

Ground water pollution

Surface water pollution

Lake water pollution

River water pollution

Sea water pollution

Sources of water pollution

Sewage and domestic wastes

Industrial effluents

Agricultural discharges

Fertilizers

Detergents

Toxic metals

Siltation

Thermal pollutants

Radioactive materials

Details are as follows -

1. Sewage & domestic wastes:

Sewage – is a cloudy dilute aqueous solution containing mineral & organic matter Includes human excreta, soap, detergent, metals, glass, rubbish garden wastes, etc

Indiscrement method of handling domestic sewage cause underground water pollution Excellent medium for growth of various pathogenic micro

organism –rendering water unfit for drinking & domestic purposes Increased BOD –affecting aquatic life

2. Industrial effluents:

Contain toxic chemicals, phenols, ketones, amines, cyanides, metallic wastes, oils, grease, dyes, radioactive wastes etc.

Pathological effects of metal water pollutants on man:

Metal	Pathological effect on man
Lead	Anaemia, vomiting, loss of appetite, convulsions, damage to liver, brain & kidney
Arsenic	Disturbed peripheral circulation, mental disturbance, liver cirrhosis, hyperkeratosis, lung cancers, ulcers in GIT, kidney damage
Mercury	Abdominal pain, headache, diarrhoea, chest pain, hemolysis
Cadmium	Growth retardation, diarrhoea, bone deformation, kidney damage, anaemia, damage to CNS, hypertension
Barium	Excessive salivation,vomiting, diarrhoea, paralysis,colic pain
Cobalt	Diarrhoea, low BP, lung irritation, bone deformation, paralysis
Chromium	GIT ulcers, diseases of CNS, cancer, nephritis
Selenium	Damage of liver, kidney, spleen, fever, nervousness, vomiting, low BP, blindness & even death
Zinc	Vomiting, cramps, renal damage
Copper	Sporadic fever, hypertension, uremia, coma

3. Agricultural discharges:

Contain plant nutrients, pesticides, insecticides, herbicides,fertilizers, farm wastes, manure slurry, sediments, etc

4. Fertilizers:

Excessive use of nitrogen fertilizers –toxic nitrites –enter blood stream –methaeglobinaemia Adversely affect plants if used in excess

5. Detergents:

Contain several pollutants which severly pollute water bodies.

6. Toxic metals:

Heavy metals are highly emitted by mining industry, metallurgical industry, chemical industry, leather industry, battery industry etc

Methyl mercury –fatal poisoning –crippling disease such as Minamata disease of Japan

7. Siltation:

Consists of dirt & dust particles, carried from land to water Cause for high turbidity of water & hinder free movement & growth of aquatic organisms

8. Thermal pollutants:

It include wastes from atomic, nuclear & thermal power plants observed. Two major problems are commonly.

a) Activity of biological life is more at higher temp & hence more demand for dissolved oxygen

b) As temp rises, amount of dissolved oxygen decreases & prove fatal for aquatic life

9. Radioactive metals in water:

- It develop Serious skin cancer, carcinoma, melanoma, breast cancer, leukemia etc.
- Radiation sickness – nausea, vomiting, anorexia, lethargy, epilation etc.
- Destroys biological immune system.
- Causes somatic & genetic disorders, gene mutations & blood abnormalities.

Measurement:

Environmental Scientists preparing water autosamplers.

Water pollution may be analyzed through several broad categories of methods: physical, chemical and biological. Most involve collection of samples, followed by specialized analytical tests. Some methods may be conducted in situ without sampling, such as temperature. Government agencies and research organizations have published standardized, validated analytical test methods to facilitate the comparability of results from disparate testing events.

Control :

Water Pollution Control Act, 1974-

Functions of State Pollution Control Boards are summarised as :

a) To create methods of utilization of sewage & suitable trade effluents in agriculture.

b) To evolve effective methods of disposal of sewage & trade effluents on land.

c) To evolve economical & reliable methods of sewage & trade effluents with regard to peculiar conditions of soil, climate, & water resources of different regions.

Ayurvedic view:

Significance of water-

Paaniyam praaninam prana viswameva cha tanmayam / (A.S.Su.6/30)

Dushtajala lakshanas:

Keetahimootra…. A.S.Su.6/20-24

Dushtam jalam picchhilam ugragandhi phenanvitam rajibhiravruttam cha /

Manduka matsyam mriyate vihanga mataascha samupachara bhramanti //

Majjanti ye chatra narashwanagaste cchhardimohajwaradaha shophan /

Gacchhanti teshamvahrutya doshan Dushtam jalam shodhayatum yatet // (S.K.3/7-8)

Sushruta told poisoned water will be oily, frothy with lots of lines & bad odour. Fishes die & other animals or birds also affected by poisoned water. After bathing by it, there will be these symptoms in humans etc. –

Vaman, moha, jwara, daha, sopha

Jala shodhana:

Patalakaravirakusumgandhanasana/ A.S.SU.6/ 25-26

Dhavaaswakarnasanaparibhadran sapatalan siddhaka mokshakou cha ……SU.K.3/9

To purify the poisoned water, collect drugs & burn it.Then coolent ash sprinkle (mix) on poisoned water, it will be pure (non poisonous).

Drugs are as follows -

Dhava (dhaya)
Ashwakarna
Asana
Paribhadra
Patala
Siddhaka (Nigundi)
Makshaka (makha)
Amalatasa
somavalka

REFERENCES

- Pink, Daniel H. (April 19, 2006). "Investing in Tomorrow's Liquid Gold". Yahoo. Archived from the original on April 23, 2006.
- West, Larry (2006-03-26). "World Water Day: A Billion People Worldwide Lack Safe Drinking Water". About.com.
- "An overview of diarrhea, symptoms, diagnosis and the costs of morbidity" (PDF). CHNRI. 2010. Archived from the original (PDF) on May 12, 2013.
- "China says water pollution so severe that cities could lack safe supplies". Chinadaily.com.cn. June 7, 2005.
- Kahn, Joseph; Yardley, Jim (2007-08-26). "As China Roars, Pollution Reaches Deadly Extremes". New York Times.
- Fact Sheet: 2004 National Water Quality Inventory Report to Congress (Report). Washington, D.C.: United States Environmental Protection Agency (EPA). January 2009. EPA 841-F-08-003.
- Wachman, Richard (2007-12-09). "Water becomes the new oil as world runs dry". The Guardian (London). Retrieved 2015-09-23.
- United States Geological Survey (USGS), Denver, CO (1998). "Ground Water and Surface Water: A Single Resource." Circular 1139.
- United States. Clean Water Act, section 502(14), 33 U.S.C. § 1362 (14).
- U.S. CWA section 402(p), 33 U.S.C. § 1342(p)
- Sushruta samhita
- Ashtang sangraha

आयुर्वेदक्षेत्रे संस्कृतस्य स्थितिः

- विद्याधीश अनन्ताचार्य काशीकर*
e-mail : vidyadhishkashkar@gmail.com

अथर्वदेवस्य उपवेदत्वेन प्रसिद्धः चरकादिमहर्षिभिः प्रतिपादितः सहस्राधिकवर्षेभ्यः भारतीयानां स्वास्थ्यानुरक्षणकर्ता परमगहनः आयुर्वेदः देशेऽस्मिन्नधुनाऽपि पठ्यते तदन्तेवासिभिरिति सुज्ञातमेव। प्राचीनकाले शास्त्रमिदं गुरूकुलपरम्परायामधीयन्ते इत्यपि सर्वश्रुतमस्ति। तदा उपनयनसंस्कारं यम्पाद्य अस्मत्पूर्वजाः स्वतनयान गुर्वाश्रमं प्रति प्रेषयन्ति स्म। गुरवः अपि शिष्यपरीक्षणानन्तरं योग्यतां वीक्ष्य शिष्यान् प्राथम्येन वेदाङ्गेष्वापि न्यूनातिन्यूनं व्याकरणच्छन्दज्योतिषां सुचारु रूपेण पठनमेव प्रायः तस्मिन् काले आयुर्वेदाध्ययनस्य प्रवेशार्हता आसीदिति चिन्त्यते। अतः आयुर्वेदाध्ययनस्य प्रारम्भकाले एव शिष्याः आयुर्वेदोपजीव्यशास्त्राणां सांख्यादिदर्शनानामति समूलाध्ययनं कुर्वन्ति स्म। तत एव तेषां आयुर्वेदशास्त्रपठनार्हतां ज्ञात्वा महत् शास्त्रमिदं पाठयितुमारम्भः सञ्जायते स्म।

आधुनिकेऽस्मिन् कालेऽपि प्रवेशपरीक्षाः विश्वविद्यालयाः योजयन्ति परं आयुर्वेदशास्त्रे प्रवेशार्थं या परीक्षा विद्यते तस्याः पाठ्यक्रमः आयुर्वेददर्शनसंस्कृतव्याकरणशून्यः इति वस्तुस्थितिः। बहुषु स्थलेषु द्वादशकक्षयाः विज्ञानशाखायाः यः क्रमः स एव प्रवेश परीक्षायाः अपि दृश्यते। एतादृकप्रवेशपरीक्षां उत्तीर्य आगताः छात्राः स्वंस्कृतज्ञानशून्या एव परिदृष्यन्ते। प्रथमवर्षे आयुर्वेदाचार्यपाठ्यक्रमे प्रविष्टानां छात्राणां ज्ञानवृद्धयर्थं संस्कृतविषयः शताङ्कानां कृते नियोजिताऽस्ति। परं संस्कृतस्य पाठनार्थ सर्वत्र आयुर्वेदमहाविद्यालयेषु एतादृशाः आचार्या विद्यन्ते ये संस्कृतसम्ळाषणे व्याकरणव्याकरणे नितरां सामान्या एवेति दुःखप्रदायिनी स्थितिः। संस्कृतविषये कथंचिदपि निरुत्साहेनैव उत्तीर्णाः एते छात्राः द्वितीयादिकं वर्षमागम्य चरकाध्ययनं मूलतः टीकातः वा कर्तुं कक्षामपि नोत्सहेरन् ते प्रायःशरकसंहितायाः तत्त्प्रादेशिकभाषान्तराणामेवानुगमनं आङ्गलभाषान्तरानुगमनं वा कुर्वन्तः धन्यताम् अनुभवन्तीति क्लेशदायिनी स्थितिः। संस्कृतस्य पर्यायेणयुर्वेदस्य मूलज्ञानमप्राप्यैव यदि एते रुग्णान् पुरतः आगच्छन्ति तार्हि किमायुर्वेदप्रतिपादितसिद्धान्तानामुपयोगं कृत्वा रोगोपशमं दातुं पारयन्ति? यथाकथञ्चिदपि अधीत्य केचन सिद्धिप्रदायकान् भेषजयोगान् मनसिदृढ़ीकृत्य सामान्यप्रतिश्यायादिकान् गदान् हर्तुं किमेतादृशस्य सार्धपञ्चाश्रितायुर्वेदप्रशिक्षस्यावययकता अस्ति खलुः? यदि एतावत्कालपर्यन्तं प्रशिक्षणं सञ्जातं तर्हि ते आयुर्वेदमाध्यमेन दुश्चिकित्स्यानामपि रोगाणां चिकित्सां

Deptt. of Maulik Siddhanta, NIA, Amer Road, Jaipur, (Rajasthan)

कर्तुं क्षमाः भवेयुरेव। यद्यपि केषुचिदायुर्वेद-महाविद्यसलयेषु एतादृशी भयावहा स्थितिः नास्ति तथापि बहुषु विद्यालयेषु न्यूनाधिका एतादृशैव स्थितिः दृश्यते केचन् महाभागास्तु संस्कृते विद्यमानमायुर्वेद-मधीत्य पश्चात् स्वाज्ञानावरणार्थम् ''आयुर्वेदाध्ययनार्थ संस्कृताध्ययनस्यावश्यता सतुरां नास्ति'' एवं द्वेषपूर्ण सम्भाषणं कुर्वन्ति मुक्तातया। केचन् महाभागास्तावत् मुक्तकण्ठेन द्वेषं न प्रसारयन्ति किन्तु मनसि तं विधाय तूष्णीं तिष्ठन्तीति तेषामेव सहोदरत्वं प्रादर्शयन्ति। केचन् एव भीतियुक्तमनसः अस्फुटतया संस्कृतम् आवश्सकत्वेन मन्यन्ते प्रसारयितुं कामन्यन्ते वा। स्पष्टाया संस्कृताध्ययनस्यावस्यकतां प्रतिपादितवन्तः केचन् अङ्गुलिमापनयोग्या एव सन्तीत्येतदपि न्यूनसतिन्यूनम् अस्माकं सौभाग्यमेव। किमर्थं एतादृशं द्वेषपर्णं व्यवहरन्ति इत्यर्थं केचन् मे तर्काः सन्ति। संस्कृत भाषा केवलं ब्राह्मणानां भाषा अतः ब्राह्मणद्वेषिणः द्विषन्ति। संस्कृतभाषा नाम देवानां भाषा इति विचिन्त्य देवद्विषाः एतां द्विषन्ति। संस्कृतभाषा वेदमूलेति कथयित्वा वेदद्वेषिभिरपि द्विष्यते। वस्तुतः संस्कृतभाषा तु भारतीयानां संस्कृतिमूला सर्वेषामेव जातिपन्थधर्मीयाणां भाषा विद्यते। अस्माकं सर्वाण्येव शासणि भवतु नाम गीर्वाणवाण्यामेव लिखितानि। शास्त्राण्येतानि न केवलं ब्राह्मणर्षिभिरपि तु क्षत्रियर्षिभिरपि लिखितानि दृश्यन्ते। एवं एतादृग्बृहच्छास्त्रविस्तरलेखने सर्वेषामेव भारतीयानां योगदानमस्ति। अतः कथञ्चिदपि नेयं द्वेषयोग्या अपि तु सर्वथैव स्नैह्या भाषैव।

आधुनिकेऽपि काले आसान् सन्ति च केचन् वैद्यवरेण्याः ये चिकित्साशास्त्रपारङ्गताः चिकित्सा-व्यवसायकुशलाः अनेकान्तेवासिभिः सेव्याः ऋषितुल्याः व्यक्तिविशेषाः ये च संस्कृतस्य न केवलं माहात्म्यं जानन्ति अपि तु संस्कृतव्याकरणस्य वेदाङ्गनामपि समूलाशेषविशेषज्ञानिनः ये च आयुर्वेदवाङ्भ्योपबृंहकाः स्वस्वग्रन्थरचनाभिः। उदाहररूपेण आचार्योपाव्हानां यादवशर्मणां तथाच गोखले उपाह्वनां भास्करमहोदयानां नामनी अत्र स्मर्येते। एतैः प्रदर्शितपथा आयुर्वेदशास्त्रम् उपयोज्य चिकित्सायां रताः कुशलाः वैद्याः आधुनाऽपि महाराष्ट्रराज्ये, कर्णाटके, केरले तथा वङ्गदेशे, अन्येष्वपि राज्येषु दृश्यने। परं सवैरेव एतैः वैद्यवरेण्यैः संस्कृताध्ययनम् आयुर्वेदाध्ययनं च स्वगुरुसमीप एव कृतं, नैव आयुर्वेदमहाविद्यालयेषु इति मे दृढमतिः। एतैः पदाविकाः तु महात्म्यं, न कथंचिदपि आङ्गलपद्धत्याः इति स्पष्टमेव परिदृश्यते। यतः आयुर्वेदीयाः महाविद्यालयाः कथञ्चिदपि संस्कृताग्रहिणः ग्रन्थाग्रहिणः नैवेति स्थितिः।

सन्ति च एवंविधाः अपि वैद्याः येः संस्कृतं न तावदधीतं परं ते आयुर्वेदचिकित्सां अतीव सुष्ठु कुर्वन्ति। किन्तु एतादृशाः वैद्याः संस्कृतमाहात्यं जानन्ति यत् यद्यमाभिः संस्कृतं पठितं स्यात् तर्हि इतोऽपि बरां चिकित्सां कर्तुं वयं समर्थाः स्यामेति। दौर्भाग्यवशादेव योग्ये काले संस्कृताध्यापकाभावे एतेषां एतादृशी स्थितिः जायते।

उपायाः

परिस्थितिपरिवर्तनं परमावश्यकम्। आयुर्वेदाध्ययनाय गुरुकुलप्रशिक्षणपद्धतिरेवानुकूला। तस्याः पुन; प्रस्थापनं कर्तव्यमेव नूतनगुरूणां निर्माणार्थं विद्यमानान् आप्तसदृशान् ऋषितुल्यान् गुरून् समालोक्य तछ्वरैव उत्तमबुद्धियुतानां छात्राणां पाठनं समायोजितव्यम्। तावत् आयर्वेदमहाविद्यालयेषु ये संस्कृताचार्याः आवश्यकाः तत्र व्याकरणाचार्याः एव नियोक्तव्याः न साहित्याचार्याः। यदि वा भवतु कापि पदविका परं व्याकरणज्ञानपूर्णा एव अत्र नियोक्तव्याः। न केवलं नामधारिणः। आयुर्वेदप्रवेशार्थं छात्राः वयसः अष्टवर्षेभ्यः एव प्रेषणीयाः। तेषां गणितादीनां लौकिंक प्रशिक्षणं तत्रैव भवेदिति योजना आवश्यकी। बृहत्कलेवरयुक्तानां आयुर्वेदग्रन्थानां अध्ययनार्थं एतत् परमावश्यकम्। उत्तमबुद्धिमन्तः विद्यार्थिनः आयुर्वेदाय प्राधान्यं प्रददतु, न प्राथम्येन ऐलोपेथीपद्धत्यै इत्यर्थ आयुर्वेदक्षेत्रे अपि सर्वकारैः उत्तमवेतनयुताः वृत्तयः राजसेवाः राजचिकित्सालयाः निर्मातव्याः। अस्मद्भिरपि अस्वास्त्थ्यविनिवृत्तये आयुर्वेदायैव प्राधान्यं दातव्यं लेतरेभ्यः। प्रतिजैविकानां औषधीनां अन्यथा अत्युपयोगात् भारतीयानां प्रपतन्तीं व्याधिप्रतिकारक्षमतां वीक्ष्यैतत्परमावश्यकं प्रतिभाति।

आयुर्वेदः नाम भारतीयानां जीवनशैली विद्यते। अस्यां ब्राह्मो मुहूर्ते उत्थानं अभ्यङ्गः, व्यायामः, उद्वर्तनपूर्वकं स्नानं, सात्त्विकः पथ्यकरः मितः आहारः, ध्यानं, रसायनादीनां सेवनं, पञ्चकर्मपद्धत्या शरीरशोधनं, ऋतुचर्या, उत्तमा रात्रिनिद्रा इत्यादीनां शताधिकानां विधीनां समावेशः दृश्यते। यदङ्गीकृत्य दुर्लभमपि स्वास्थ्यं लीलया प्राप्तुं शक्यम्। सर्वं चैतद् आयुर्वेदवाङ्मयं चरकसुश्रुतवाग्भटकास्य-फभावमिश्रमाधवशार्ङ्गधरचक्रपाणिदत्तारुणदत्तहेमाद्रिडल्हण-विजयरक्षितादिप्रणीतं कात्स्न्येन संस्कृतभाषायामेव लिखितं विद्यते यस्याध्ययनं बिना चैतदुष्प्राप्यमेव। अतः अस्मत्संस्कृतिमूलायाः संस्कृतभाषायाः अध्ययनं आयुर्वेदीयैः अवश्यमेव विधेयमिति शम्।

परिषद् समाचार

नोएडा में प्रथम आम सभा सम्पन्न

विश्व आयुर्वेद परिषद् नोएडा की प्रथम आम सभा एक सतत चिकित्सा शिक्षा (CME) के रूप में आयोजित हुई। परिषद् की आजीवन सदस्य डॉ0 रूचि गुलाटी एम.डी. ने Disc problems and Ayurveda पर सुन्दर और सारगर्भित प्रस्तुति दी। परिषद् को और अधिक विस्तार कैसे दिया जाय, इस विषय पर भी प्रकाश डाला गया। सभा की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष डॉ0 सुरेन्द्र चौधरी ने की। संयोजक डॉ प्रशांत शांडिल्य का प्रयास अत्यंत सराहनीय रहा।

विश्व योग दिवस पर मुट्ठीगंज, प्रयाग में योग शिविर सम्पन्न

विश्व योग दिवस पर विश्व आयुर्वेद परिषद् के सदस्यों ने मुट्ठीगंज, प्रयाग में भगवान पतंजलि एवं योग गुरु रामदेव को पुष्पाजंलि अर्पित कर योगाभ्यास किया तथा एक वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया।

सभाध्यक्ष डॉ0 प्रेम शंकर पाण्डेय जी ने बताया था कि चित्तवृत्ति जैसे– काम, क्रोध, लोभ, मोह, आदि का नियंत्रण करना योग है। परिषद् उपाध्यक्ष डॉ0 जे नाथ ने कहा कि मानसिक एवं शारीरिक दशा को साम्यावस्था में बनाये रखना योग है। डॉ0 प्राची प्रजापति ने बताया कि– योग द्वारा जटिल बीमारियां भी नियंत्रित हो जाती हैं, किन्तु योग्य गुरु के सानिध्य में नियमित योगाभ्यास करने से।

सभा में डॉ0 वी0 एस0 रघुवंशी, डॉ0 शंकर मिश्र, डॉ0 आर0सी0 तिवारी, डॉ0 जितेन्द्र कुमार, डॉ0 ममता मिश्र एवं दीनानाथ जायसवाल उपस्थित रहें। सभा का संचालन डॉ0 एम0 डी0 दूबे ने किया।

राजस्थान में चरक जयन्ती समारोह का आयोजन

विश्व आयुर्वेद परिषद्, राजस्थान के तत्वावधान में श्रावण शुक्ल नागपंचमी पर राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर में आयोजन सचिव डॉ0 सी.आर. यादव के निर्देशन में चरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के निदेशक प्रो0 के. शंकर राव रहें। विशिष्ट अतिथि डॉ0 के. एल. मीणा व डॉ. कमलेश विद्यार्थी थे। डॉ0 सुनील यादव (प्रदेश उपाध्यक्ष) ने अतिथियों का स्वागत व परिचय करवाया। डॉ0 सी. आर. यादव ने कार्यक्रम की रूपरेखा बतायी तथा डॉ0 गोविन्द पारीक ने परिषद् परिचय करवाया। डॉ0 आशुतोष ने परिषद् गीत गाया। इस अवसर पर नेत्रदान प्रोत्साहन संकल्प का कार्यक्रम शुरू किया गया। जिसके संयोजक डॉ0 काशीनाथ ने नेत्रदान की महत्ता बताई। डॉ0 विपिन अरोड़ा ने चरक के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। कुछ छात्रों ने चरक संहिता के श्लोकों का सस्वर पाठ किया। इस अवसर पर चरक संहिता पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी रखी गयी, जिसमें विजयी छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। धन्वन्तरि स्टडी सर्किल के वक्ताओं को भी प्रमाण पत्र दिया गया। डॉ0 सुनील यादव ने रक्तदान की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में लगभग 200 से अधिक छात्र–छात्राओं व अध्यापकों ने भाग लिया।

Dr. Rishiraj Vashistha, from Jagadhri (Yamunanagar) has been nominated as the Chairman in Council of Indian Medicines from the Government of Haryana. Vishwa Ayurved Parishad Congratulate him for his Achievement.

विश्व आयुर्वेद परिषद् दैनन्दिनी एवं निर्देशिका का हांगकांग में लोकार्पण

विश्व आयुर्वेद परिषद् प्रकाशन द्वारा प्रकाशित दैनन्दिनी एवं निर्देशिका का हांगकांग में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में लोकार्पण चीनी भाषा विश्वविद्यालय, गुवानडाग, चीन, के प्रो0 चिंग एवं प्रो0 ली हुई द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ0 प्रणव शर्मा, डॉ0 राम सनेही लाल शर्मा, डॉ0 गंगा प्रसाद शर्मा, डॉ0 एम0 एम0 पाठक आदि उपस्थित रहें। डॉ0 रंजन विशद ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

राष्ट्रीय कार्य समिति एवं संगोष्ठी लखनऊ में सम्पन्न

विश्व आयुर्वेद परिषद् के राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक एवं संगोष्ठी शिक्षा शोध संस्थान, निराला नगर, लखनऊ में दिनांक 9–10 जुलाई 2016 को सम्पन्न हुई। प्रथम सत्र उद्घाटन एवं परिचय का रहा। द्वितीय सत्र का विषय–चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान था, जिसके संयोजक डॉ0 शिवादित्य ठाकुर, अध्यक्ष–प्रो0 सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र, कुलपति, उत्तराखण्ड, आयुर्वेद विश्वविद्यालय, देहरादून तथा सह अध्यक्ष प्रो0 बी0 एम0 गुप्ता, राष्ट्रीय अध्यक्ष विश्व आयुर्वेद परिषद् थे। आयुर्वेद शिक्षा चिकित्सा एवं अनुसंधान के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई। इसमें डॉ0 मनोज मिश्र, डॉ0 प्रेमचन्द्र शास्त्री, वैद्य हरिशंकर शर्मा, डॉ0 सुरेन्द्र चौधरी, प्रो0 अश्विनी भार्गव, डॉ0 योगेश चन्द्र पाण्डेय, डॉ0 आदित्य तिवारी, डॉ0 गोविन्द पारीक, डॉ0 ब्रजेश गुप्ता, डॉ0 पुनीत मिश्र, प्रो0 सुरेश कुमार आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

तृतीय सत्र के संयोजक डॉ0 के0 के0 द्विवेदी, अध्यक्ष प्रो0 योगेश चन्द्र मिश्र तथा सह अध्यक्ष प्रो0 पी0 वेंकटाचारी जी थे। इस सत्र में राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले कार्यक्रमों की समीक्षा की गयी। मुख्य रूप से डॉ0 पवन शर्मा, डॉ0 रामतीर्थ शर्मा, डॉ0 गोविन्द पारीक, डॉ0 रवि श्रीवास्तव, प्रो0 हेमन्त शर्मा ने इस सत्र में अपना विषय प्रतिपादित किया।

चतुर्थ सत्र के संयोजक प्रो0 बलदेव कुमार, अध्यक्ष माननीय दिनेश जी, सह अध्यक्ष–प्रो0 हरि भदौरिया जी थे। इस सत्र में राम प्रताप जी, डॉ0 वैभव कुलकर्णी, डॉ0 ईश्वर चन्द्र जी, डॉ0 सुरेश जकोटिया, डॉ0 हरिदत्त शास्त्री, डॉ0 वाचस्पति मिश्र, डॉ0 महेश, डॉ0 श्रीधर अनीशेट्टी, डॉ0 समी रेड्डी, डॉ0 महेश अग्रवाल, डॉ0 विजय, डॉ0 बलेदव बग्गा, डॉ0 सत्यसरगु सत्यनारायण, डॉ0 विजय कुमार राय, डॉ0 मनीष मिश्र ने विषय पर प्रकाश डाला। अगली कार्य समिति की बैठक, तिरूपति आन्ध्र प्रदेश में फरवरी 2017 में करने का निर्णय लिया गया। नवीन घोषणा के अन्तर्गत डॉ0 कमलेश कुमार द्विवेदी, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) डॉ0 रवि श्रीवास्तव, भोपाल (मध्य प्रदेश) डॉ0 प्रमोद जी (तेलंगाना) डॉ0 संजय त्रिपाठी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) को केन्द्रीय कार्यकारिणी का सदस्य घोषित किया गया।

उत्तर प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक लखनऊ में सम्पन्न

विश्व आयुर्वेद परिषद् की उत्तर प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक लखनऊ में दिनांक 10 जुलाई 2016 को सम्पन्न हुई। जिसकी अध्यक्षता डॉ0 सुरेन्द्र चौधरी (प्रदेश अध्यक्ष) एवं संयोजक डॉ0 विजय राय (महामंत्री) ने किया। बैठक का आरम्भ प्रदेश की नई कार्यकारिणी के सदस्यों के परिचय के साथ हुआ एवं इसमें परिषद् को प्रत्येक जिले तक इकाई गठन के माध्यम से सदस्य संख्या बढ़ाने के साथ–साथ विस्तार की रूप रेखा तय की गई। बैठक में डॉ0 कमलेश कुमार द्विवेदी, डॉ0 पुनीत मिश्र, डॉ0 श्रीश मिश्र, डॉ0 मनीष मिश्र, डॉ0 प्रियंकर सैनी, वैद्य आशीष कुमार मिश्र, डॉ0 जयदीप वर्मा, डॉ0 सुबोध वर्मा, डॉ0 धन्वन्तरि त्यागी, डॉ0 ब्रजेश गुप्ता, डॉ0 विभुकान्त एवं डॉ0 राजीव सक्सेना प्रमुख रूप से उपस्थित रहें।